रवीन्द्र संगीत

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पच्चीस गीतों का
स्वरलिपि सहित भावानुवाद

★

प्रस्तुतकर्ता
राधेश्याम पुरोहित

★

सम्पादक
लक्ष्मीनारायण गर्ग

प्रकाशक
संगीत कार्यालय – हाथरस

आलाप ● ● ●

रवीन्द्र-जयन्ती पर रवीन्द्र के कृतित्व को स्वराभूषणों द्वारा अलंकृत करके हम 'रवीन्द्र संगीत' के नाम से हिन्दी-जगत को अर्पित कर रहे हैं। स्व० रवीन्द्रनाथ टैगोर ने लगभग चार हजार ऐसे छन्दों की रचना की जिन्हें गेय कहा जासकता है। उनका छन्द स्वत: संगीत में बँध जाता था, जिसमें शास्त्रीय और लोक-संगीत दोनों का प्राकृतिक समन्वय विद्यमान रहता था, और यही रवीन्द्र-संगीत की विशेषता है। अपने काव्य के माध्यम से उन्होंने शास्त्रीय और लोकसंगीत का ऐसा धरातल प्रस्तुत किया जिस पर कलाकार के अमूर्त्त भाव मूर्त्त हो उठते हैं। चेतना की कल्पना शक्ति को प्रेरित करके व्यंजना अथवा आकृति की समृद्ध शक्ति के द्वारा उनके गीत रूप और गति की सफल अभिव्यक्ति करने में सक्षम हैं।
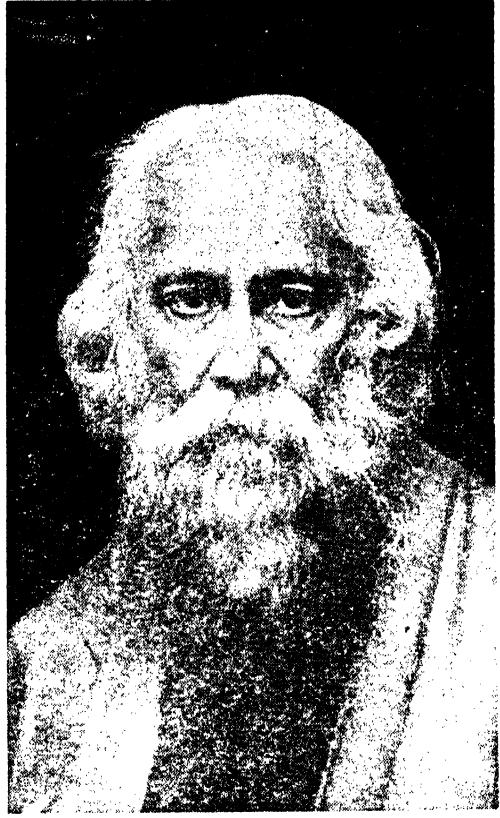
बंगला-भाषा में नाद-सम्पत्ति का भण्डार है, अत: बंगला-काव्य तो एक प्रकार का संगीत ही है। १८ वीं और १९ वीं सदी में बंगला-धुनें कीर्त्तन और शास्त्रीय संगीत के प्रभाव से रंग गई थीं। किन्तु टैगोर के छन्द ने एक ऐसा मोड़ प्रदान किया जो संगीतकार के लिये आनन्द की मार्मिक अनुभूति बनकर रह गया। कविवर टैगोर का संगीत अध्ययन अत्यन्त सूक्ष्म था, उनकी आवाज़ में एक सिद्ध गायक के कण्ठ जैसी मधुरिमा निहित थी। छन्द की गत्यात्मक तरंग में वे अपना कवि और संगीतज्ञ हृदय लेकर एक सम्राट की भाँति विचरण किया करते थे। उनके छन्द की यह विशेषता है कि उसको विभिन्न लयों में गाया जा सकता है; किन्तु उसके लिये ऐसे गायक की आवश्यकता है, जिसके मनान्तर्गत भावों में सौन्दर्य विद्यमान हो और उसका नैतिक स्तर अत्यन्त उत्कृष्ट हो। अतएव, रवीन्द्र-संगीत जहाँ स्वच्छन्द-तरंग की भाँति स्पष्ट और सरल है, वहाँ प्रस्तुतीकरण में कठिन भी है।

एक सफल चित्रकार, संगीतकार तथा कवि होने के नाते टैगोर स्वयं कलात्मक सौन्दर्य के प्रतिबिम्ब स्वरूप थे। संगीत के प्रति अन्य कलाओं की अपेक्षा उनके विचार अधिक उत्कृष्ट थे। जगत् की आत्मा अथवा ईश्वरप्राप्ति के लिये 'संगीत' उनकी दृष्टि में उपासना का पुष्प था। प्रकृति का सान्निध्य रवीन्द्र को सदैव मिलता रहा, अत: उसकी गोद में जिस गेय काव्य का निर्माण उनके द्वारा हुआ, वह विश्व-साहित्य में अप्रतिम है। किसी को क्या मालूम है कि जब एक ओर सूर्य का अवसान हो रहा होता है और दूसरी ओर से तारे उद्भूत होते हैं तो तट पर बैठा कवि गगन की ओर निहारता हुआ कहाँ खोजाता है? यह आत्मविस्मृति की भावना ही शब्द और स्वरों को कहीं से खोज-खोजकर लाती है और छन्द के बंधन में पिरोकर उसका एक सुनहरी हार बना देती है।

हर एक कवि के गीत नहीं गाये जा सकते; इसी प्रकार हर गायक का संगीत शब्दों का चोला पहनने के योग्य नहीं होता। जो कवि काव्य-रचना के समय गायेगा और जो गायक गायन के समय काव्य की आत्मा के निकट रहेगा उसी को सफलता प्राप्त हो सकती है। अपने एक अनुभव में टैगोर ने कहा है—"गान में जब शब्द होते हैं तो उन शब्दों के लिये यह उचित नहीं कि वे गान का अतिक्रमण कर जायँ, वहाँ वे गान के वाहन मात्र हैं। गान अपने ही ऐश्वर्य से बड़ा है—वाक्य की गुलामी वह क्यों करने लगा? वाक्य जहाँ समाप्त होता है, वहीं गान शुरू होता है जिसे वाक्य प्रगट नहीं कर सकता उसे गान करता है, इसीलिये वह अनिर्वचनीय है।"

एक स्थान पर टैगोर ने लिखा है कि गुनगुनाते–गुनगुनाते जब भी मैंने कोई पंक्ति लिखी है तभी देखा है कि स्वर जिस स्थान पर वाक्य को उड़ा लेगया, वहाँ तक वाक्य पैदल चलकर पहुँच ही नहीं सका। तब ऐसा लगता है कि जिस गोपन बात को सुनने के लिये मनमें साध पोष रहा हूँ, वह मानो वनराज की श्यामलिमा में मिला हुआ है, पूर्णिमा–रात्रि की निस्तब्ध शुभ्रता में डूबा हुआ है, दिगन्तराज की नीलाभ सुदूरता में अवगुण्ठित हो रहा है। वह मानो समस्त स्थावर-जंगम की गूढ़ और भेद भरी बात है।

बचपन का एक गीत जो टैगोर के अन्तस्तल में वर्षों तक स्थाई रहा वह था—"तो मायि विदेशिनी साजिये के दिले" (तुम्हें विदेशिनी के वेश में किसने सजा दिया) इस पद ने एक दिन टैगोर को दूसरा गान लिखने के लिये बाध्य कर ही दिया अतः पहली पंक्ति इस प्रकार लिखी गयी—"आमि चिनि गो चिनि मोमारे आगो विदेशिनी" (ऐ विदेशिनी, मैं तुम्हें पहचानता हूँ, पहचानता हूँ।) टैगोर का कहना था कि यदि मेरे इस गान के साथ स्वर न होता, तो उसकी क्या दशा होती, कह नहीं सकता; किन्तु स्वर के जादू ने मेरे मन में विदेशिनी की एक अपूर्व मूर्ति साकार करदी। ब्रह्माण्ड की विश्वमोहिनी विदेशिनी के द्वार पर स्वर ने मुझे अनायास ही ला खड़ा किया। कभी-कभी जब बोलपुर के रास्ते से कोई गाता हुआ निकलता तो मुझे लगता कि बाउल का गान भी ठीक वही बात कह रहा है जो मेरे भावों के पिंजड़े में क़ैद थीं। मन उसे पकड़कर चिरन्तन बनाकर रखना चाहता है, किन्तु कर नहीं पाता। उस अपरिचित पक्षी के निःशब्द आवागमन की सूचना स्वर के सिवाय और कौन दे सकता है? इसीलिये गान की पुस्तक में मुझे सदैव संकोच लगता है। संगीत को छोड़कर उसके वाहनों को सजा रखना ऐसा ही होता है, जैसे गणेश को छोड़ उनके चूहे को पकड़ रखना।"

रवीन्द्र के गीतों में एक रहस्य है जो सहज ही बोधगम्य नहीं। केवल साधक और सहृदय के लिये उस रहस्य का द्वार खुलता है और वह रवीन्द्र के अन्तस्तल का स्पर्श करने में सक्षम होता है। शिल्पी, गायक और कवि होने के नाते उनकी रचनाओं में त्रिवेणी का एक ऐसा आनन्द मिलता है जिसमें अवगाहन कर सांसारिक राग और द्वेष घुल जाते हैं लोक और परलोक प्रकाशित हो उठते हैं। कलाजन्य आनन्द के द्वारा सत्य की उपलब्धि रवीन्द्र–संगीत का मूल उद्देश्य है, इसीलिए बंगाल में इसकी एक समृद्ध परम्परा विद्यमान है। संगीत, साहित्य, सौन्दर्य और सत्य का समन्वय होने के कारण रवीन्द्र-संगीत संस्कृति और कलात्मक जगत का सबसे अधिक सम्पन्न रूप है।

प्रस्तुत पुस्तक 'संगीत कार्यालय' द्वारा हिन्दी-जगत के लिये प्रथम प्रयास है, जिसको संगीत-प्रेमी साधकों ने अपनाया तो निश्चय ही यह परिश्रम सार्थक सिद्ध होगा और रवीन्द्र का संगीत हिन्दीभाषियों में अनुप्राणित हो उठेगा।

लक्ष्मीनारायण गर्ग

आशीर्वाणी

श्री राधेश्याम पुरोहित से आज उनके द्वारा किये गये बंगला रवीन्द्र संगीत का हिन्दी रूपान्तर सुर सहित सुन कर बड़ा संतोष हुआ। हिन्दी भाषा के बारे में मेरा ज्ञान सामान्य होते हुए भी मुझे बचपन से ही नाना प्रकार के हिन्दी-गीत सुनने और सीखने का मौक़ा मिला है। हिन्दी-गीतों के सुर में बंगला-गीत प्रस्तुत करना, जिसे हम चलती बंगला में "गान-भाँगा" (गीत तोड़ना) कहते हैं, ऐसे गीत भी ठाकुर-परिवार में प्रचलित हुए हैं। लेकिन बंगला-गीतों को और विशेष रूप से रवीन्द्र संगीत जैसे सूक्ष्म भाव और भाषायुक्त गीतों का मूल सुर अविकल रखकर हिन्दी में रूपान्तरित किया जा सकता है—इसका दृष्टान्त मैंने आज पहली बार पाया है।

मैंने पहले ही कहा है कि गीतों के अनुवाद की भाषा के बारे में मैं अपने विचार प्रगट करने में अक्षम हूँ। लेकिन रूपान्तरित गीत जो सरलता से मूल रवीन्द्र संगीत के सुर में गाये जा सकते हैं, यह मैंने आज उपलब्ध किया है और इस दृष्टि से श्री राधेश्याम का कृतित्व अति प्रशंसनीय मानती हूँ। मैं अपने अनुभव से कहती हूँ कि मेरे परिचित हिन्दी के एक बड़े पंडित भी इस प्रकार के कार्य को करने के प्रस्तावमात्र से भयभीत होकर पीछे हट गये थे। ऐसी दशा में श्री राधेश्याम ने जो यह कठिन व्रत ग्रहण किया और अन्त तक उसे निभाया, यह उनके आत्म-प्रत्यय और निष्ठा का परिचायक है। भारतीय प्रदेशों में ऐक्य और सद्भावना लाने की यह अभिनव प्रचेष्टा अति प्रशंसनीय है। श्री राधेश्याम की यह प्रचेष्टा सफल हो, यह आशीर्वाद करती हूँ।

शांतिनिकेतन
२० मार्च, १९५८

(हः) इन्दिरा देवी चौधुरानी

भूमिका

श्री राधेश्याम पुरोहित से मैं अच्छी तरह परिचित हूँ । ये विश्वभारती विश्वविद्यालय के बी. ए (ऑनर्स) हैं और अर्थशास्त्र में वहीं से एम. ए. कर रहे हैं । संगीत में भी इनकी प्रगाढ़ अभिरुचि है । बंगला-भाषा पर इन्होंने सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त किया है और 'विश्व-भारती' में रहने के कारण ये 'रवीन्द्र-संगीत' के सच्चे प्रेमी भी हैं। हिन्दी तो इनकी मातृ भाषा ही है । इसीलिये इन्होंने रवीन्द्रनाथ के कुछ गीतों का साधु हिन्दी में रूपांतर करने का बहुत ही सराहनीय कार्य किया है । श्री पुरोहित की विशेषता यह है कि ये रवीन्द्रनाथ द्वारा दिये गये अपने गीतों के मौलिक सुरों में गा भी सकते हैं । इस प्रकार ये संगीतज्ञ और गायक भी हैं । इनकी इस पुस्तक के द्वारा हिन्दी भाषा-भाषी कुछ नवीन वस्तु प्राप्त करेंगे । वह नवीन वस्तु है—रवीन्द्रनाथ के गीतों का हिन्दी अनुवाद । हिन्दी में अनूदित इन गीतों को 'रवीन्द्र संगीत' के शास्त्रीय नियमों के अनुसार गाया भी जा सकता है । तात्पर्य यह है कि इस अनुवाद में गेय सुरों पर भी पूरा ध्यान रखा गया है । यह कहा जा सकता है कि ये रवीन्द्रनाथ के गीतों को भाषा और संगीत दोनों दृष्टियों से उनकी मौलिक विशेषताओं के साथ हिन्दी-भाषी अथवा हिन्दी-व्यवहारी जनों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं । प्रस्तुत पुस्तक के कुछ गीतों को मैंने श्री पुरोहित से सुना है । मैं वैसे संगीत के विषय में अधिक जानकारी नहीं रखता, फिर भी जब ये इन गीतों को गा रहे थे तब मैंने अनुभव किया कि इस कार्य में इन्हें पूरी सफलता मिली है । श्री पुरोहित रवीन्द्रनाथ के पच्चीस गीतों को उनके जन्म-दिन (बंगला पच्चीस वैशाख) के अवसर पर प्रकाशित कर रहे हैं । यह निश्चय ही बहुत ही उपयोगी प्रकाशन होगा । मैं समझता हूँ कि बंग-प्रदेश के बाहर भारत में रवीन्द्रनाथ के काव्य तथा संगीत दोनों के क्षेत्रों में अवदानों को प्रचारित-प्रसारित करने के लक्ष्य के कारण यह कार्य उक्त कवि और गायक के प्रति वास्तविक श्रद्धा और सेवा का कार्य प्रमाणित होगा । इस क्षेत्र में मैं श्री पुरोहित की सम्पूर्ण सफलता का अभिज्ञापुक हूँ । रवीन्द्रनाथ के संगीत, काव्य और चित्र में एक सार्वभौमिक मर्मस्पर्शिता है । किन्तु इस मर्मस्पर्शिता की अनुभूति अ-बंगाली व्यक्तियों में कुछ अस्पष्ट रूप में देखी जाती है । कुछ लोग तो इन (रवीन्द्रनाथ के संगीत, काव्य और चित्र) को आलोचनात्मक ढँग से देखते हुए पाये जाते हैं । मुझे यह इसलिये कहना पड़ रहा है कि मैंने स्वयं कुछ लोगों को ऐसा करते-कहते देखा-सुना है । श्री पुरोहित ने 'रवीन्द्र-संगीत' को कुशल संगीतविद् और श्रेष्ठ काव्य-प्रेमी के रूप में अच्छी तरह समझा-बूझा है । इसीलिये ये पूर्ण प्रवीणता के साथ इन गीतों को मौलिक सुरों में हिन्दी का रूप दे सके हैं । अब मुझे आशा है कि हिन्दी-संसार के कवित्वरसिक और संगीत के मर्मज्ञों में इस पुस्तक का यथोचित समादर होगा ।

—सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

सभापति विधान परिषद,

पश्चिम बंग, कलिकाता ।

परिचय

श्री राधेश्याम पुरोहित 'विश्व-भारती' के छात्र के रूप में यहाँ काफी दिनों से अध्ययन कर रहे हैं। अतः वे यहाँ के जीवन से घनिष्ठ भी हो गये हैं। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के साहित्य और सङ्गीत की ओर इनका स्वाभाविक अनुराग है। यद्यपि आपकी मातृभाषा हिन्दी (राजस्थानी) है, लेकिन यहाँ अध्ययन करने के कारण बँगला-भाषा के प्रति इनका मन गंभीर भाव से आकृष्ट हुआ है। आपने रवीन्द्र-साहित्य का अच्छा अध्ययन किया है और उसे अनुवादित करके हिन्दी-भाषा-भाषी लोगों के लिये सुलभ भी किया है। इस अल्प उम्र में ही इन्होंने रवीन्द्रनाथ तथा अन्यान्य बंगाली कथाकारों की रचनाओं से आठ पुस्तकें प्रकाशित की हैं। उनके इस उत्साह को देखकर रवीन्द्रनाथ के संगीत को हिन्दी में रूपान्तर करने की संभावना पर मेरी उनसे आलोचना हुई थी। बंगाली संगीत को मौलिक रूप में रूपांतर करना बड़ा कठिन काम है, लेकिन इस कार्य की कठिनता को देखकर भी श्री राधेश्याम पीछे नहीं हटे। अतः रवीन्द्र के गीत हिन्दी में भी मौलिक सुर और ताल में गाये जा सकें, इसके प्रति मैंने इनसे ध्यान रखने के लिये कहा। श्री राधेश्याम मुझसे लगभग ५-६ वर्षों से बंगला रवीन्द्र-सङ्गीत सीख रहे थे। अतः रवीन्द्र-सङ्गीत के सुर और छन्द के बारे में अभिज्ञ हो गये थे। इसलिये प्रस्तावित गीतों के रूपांतर के कार्य में वे सफल रहेंगे, इस बारे में मैं प्रारम्भ से ही निश्चित था।

कुछ दिनों के बाद जब वे एक-दो करके रवीन्द्र के गीतों का हिन्दी रूपांतर करके मुझे सुनाने लगे तो मैंने अनुभव किया कि उनके रूपांतरित गीत भी बँगला रवीन्द्र-संगीत की तरह मूल सुर, लय और ताल में गाये जा सकते हैं। श्री राधेश्याम के गीतों की भाषा भी बड़ी मधुर लगी। अतः मैंने उनसे कहा कि वे इसी प्रकार के गीतों का और भी रूपांतर करें और रवीन्द्रनाथ के विभिन्न प्रकार के गीतों को स्वरलिपि-सहित हिन्दी-भाषा में प्रकाशित करें। इस पुस्तक के ये पचीस गीत उनकी उस चेष्टा का ही फल है। ये सभी गीत मूल रवीन्द्र-संगीत के सुर में गाये जा सकते हैं। साथ ही मैंने यह भी अच्छी तरह अनुभव किया है कि रवीन्द्रनाथ ने अपने बँगला गीतों में जो भाव रखा था, श्री राधेश्याम के रूपांतरित हिन्दी-गीतों में भी वह भाव अक्षुण्ण रहा है। अतः गीतों में कहीं भी सुर अथवा लय का विशेष परिवर्तन नहीं किया गया है। मेरा विश्वास है कि वर्तमानकाल के हिन्दी-कवि और गायक इन गीतों को जब मूल रवीन्द्र-सङ्गीत के सुर में सुनेंगे तो किस प्रकार वैचित्र्यमय भाव को विचित्र रागिनी से गूँथा जा सकता है, इसे वे अनुभव करेंगे तथा उससे अपनी सृष्टि के लिये भी नाना रूप से प्रेरणा लेंगे। मैं श्री राधेश्याम को उनकी इस प्रचेष्टा के लिये हृदय से आशीर्वाद देता हूँ। तथास्तु।

शांतिदेव घोष

१० मार्च, १९५८

अध्यक्ष, रवीन्द्र-संगीत और नृत्य-विभाग

संगीत-भवन, शांतिनिकेतन

प्रस्तावना

इस पुस्तक के प्रारम्भ में तीन विद्वानों ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीतों पर आलोकपात किया है, जिसके बाद कुछ कहना अनावश्यक हो जाता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के गीतों की विशेषता और उनके शास्त्रीय नियमों का उल्लेख करते हुए तीनों महानुभावों ने मेरी इस नवीन प्रचेष्टा की ही अधिक प्रशंसा की है। लेकिन रवीन्द्र-संगीत के नाम से जो संगीत प्रचलित है वह हमारे भारतीय संगीत-शास्त्र के नियमों को कितना मानता है तथा उससे कितना प्रभावित है, यह जानना भी आवश्यक है। संस्कृत को जिस प्रकार भारतीय समस्त भाषाओं की जननी कहा जाता है, उसी प्रकार भारतीय संगीत-शास्त्र को भी इस महादेश की समस्त संगीत-धाराओं का उत्स माना जा सकता है।

स्वल्प स्थान में रवीन्द्र-संगीत की व्याख्या और उसकी विशेषताएँ समझना कठिन है, फिर भी संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि रवीन्द्र-सङ्गीत एक ऐसा सङ्गीत है, जहाँ भारतीय समस्त प्रदेशों का सङ्गीत हिलोरें भरता है। भाव को वहन करती है भाषा और भाषा की पृष्ठभूमि पर संगीत अपने को प्रकाशित करता है। शास्त्रीय सङ्गीत में राग और रागिनियों की प्रधानता रहती है। भाषा वहाँ मुख्य स्थान नहीं रखती। दो या चार पंक्तियों का आश्रय लेकर गायक घंटों राग-रागिनियों का विस्तार और आलाप कर सकता है। लेकिन रवीन्द्र-सङ्गीत में इसी स्थान पर तीन वस्तुएँ प्रमुख हैं। प्रथमत: भाव, द्वितीय भाषा और तृतीय संगीत। जैसा भाव हो उसी के अनुरूप भाषा और तद्रूप राग या रागिनी द्वारा उसे संगीत के रूप में गाया जाना—यही 'रवीन्द्र संगीत' की विशेषता है। अर्थात् रवीन्द्र-सङ्गीत में राग या रागिनी को जितनी प्रमुखता मिली है—काव्य को उससे कम नहीं मिली है। अत: इस संगीत का सम्पूर्ण आनन्द लेने के लिये काव्य की भाषा से परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है। लेकिन जब तक हिन्दीभाषा-भाषी अथवा हिन्दी व्यवहारी जनों के लिये यह संभव न हो, मैंने एक क्षुद्र प्रचेष्टा की है। वह है रवीन्द्र-सङ्गीत का उपर्युक्त तीनों विशेषताओं-सहित हिन्दी-भाषा में रूपान्तर।

इस पुस्तक के गीतों की स्वरलिपि के प्रारम्भ में ताल और राग के नाम लिखे गये हैं। वैसे रवीन्द्रनाथ ने अपने कुछ गीतों के सिवाय कहीं भी राग अथवा ताल का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया है। मैंने इस पुस्तक में राग-रागिनियों का विश्लेषण इसलिये किया है कि रवीन्द्र-सङ्गीत से जो अपरिचित हैं, वे जान सकें कि इन गीतों में कौन-कौन से राग या रागिनियों का मिश्रण हुआ है। इसी स्थान पर यह लक्ष्यनीय है कि तीन या चार राग-रागिनियों का रवीन्द्रनाथ ने जैसा मिश्रण किया है, उससे बहुधा एक नवस्वर की सृष्टि हुई है। यह नवीनता ही रवीन्द्र-सङ्गीत की विशेषता है।

इतिपूर्व तीनों महानुभावों ने यह संकेत किया है कि साहित्य का अनुवाद करना ही कठिन होता है। वहाँ भगवती की कृपा से मैंने रवीन्द्र-सङ्गीत जैसे सूक्ष्म भाव और

भाषा-युक्त गीतों का मौलिक सुर-सहित रूपांतर किया है। लेकिन इस कार्य में मैं कहाँ तक सफल रहा हूँ, यह कहना मेरे लिये संभव नहीं है। साथ ही इस कार्य में कई त्रुटियों के रहने की संभावना है। दो-चार अकोशीय हिन्दी-शब्दों का प्रयोग भी मिल सकता है। इन सबके लिये एकमात्र मैं ही उत्तरदायी हूँ। मेरे अल्प ज्ञान के कारण जो त्रुटियाँ रहेंगी उन्हें सहृदय एवं विद्वान् पाठक सुधार लेंगे—ऐसी आशा करता हूँ।

अब कृतज्ञता और ऋण स्वीकार करना है।

मैं अपनी श्रद्धा श्रद्धेया इन्दिरा देवी चौधुरानी, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, श्रीयुत शिवनाथ तथा श्रीयुत शान्तिदेव घोष के प्रति व्यक्त करता हूँ—जिन्होंने आशीर्वाद तथा बहुमूल्य सुझाव देकर इस पुस्तक का प्रकाशन संभव किया है।

अन्त में निवेदन करूँगा कि यह पुस्त क मेरी अपनी प्रचेष्टा से कभी प्रकाश में नहीं आती। प्रथमतः मैंने कभी यह विचार ही नहीं किया था कि जो गीत मैं लिखता हूँ उन्हें पुस्तक आकार में प्रकाशित करना होगा और द्वितीयतः इन गीतों को रवीन्द्र-संगीत के नियमों के अनुसा रस्वरलिपि-बद्ध करना होगा। मेरे लिये उपर्युक्त कार्य असंभव था। इसलिये इस पुस्तक को प्रकाशित करने का सम्पूर्ण श्रेय श्रीयुक्ता तृणारॉय, पी० एच० डी० (बॉन) सुरश्री (कलकत्ता) को ही है। आपने इस पुस्तक की स्वरलिपि अत्यल्पकाल में प्रस्तुत का है तथा गीतों के राग-रागिनियों का विश्लेषण और भाषा एवं छन्द-सम्बन्धी बहुत से सुझाव दिये हैं। उनके इस बहुमूल्य कार्य के लिये उन्हें धन्यवाद या आभार प्रदर्शित नहीं करूँगा। कारण, यह दोनों शब्द ही उनके लिये अपर्याप्त हैं। इस पुस्तक में उनके सहयोग को मेरे प्रति उनके असीम स्नेह का प्रतीक चिरकाल तक मानता रहूँगा। एवमस्तु ॥

२५ वैशाख—बंगला सन् १३६६
८ मई १९५९
शांतिनिकेतन, पश्चिमी बंगाल

राधेश्याम पुरोहित

स्वरलिपि-संकेत

पंडित भातखण्डेजी के मतानुसार ही स्वरलिपि प्रस्तुत की गई है। लेकिन इस पुस्तक की आवश्यकता और सुविधा के लिये कुछ नियम और चिह्न जोड़े गये हैं। चिह्नों की व्याख्या निम्नलिखित रूप से माननी चाहिये:—

(१) सा़ रे़ ग़ म़ प़ ध़ नि़ — स्वरग्राम के नीचे बिंदु रहने पर उसे मंद्र सप्तक का स्वर समझना चाहिये।

सा रे ग म प ध नि — स्वरग्राम में यदि कहीं कोई चिह्न न रहे तो उसे मध्य सप्तक का स्वर मानना चाहिये

सां रें गं मं पं धं निं — स्वरग्राम के ऊपर बिंदु रहने पर उसे तारसप्तक के अन्तर्गत समझना चाहिये।

(२) <u>रे</u> <u>ग</u> <u>ध</u> <u>नि</u> — स्वर के नीचे - चिह्न रहने पर उसे कोमल स्वर समझना चाहिये।

(३) मॅ — मध्यम के ऊपर। चिह्न रहे तो उसे तीव्र समझना चाहिये।

(४) ⌣ — जिन स्वरों के नीचे ⌣ यह चिह्न रहे, उन्हें एक मात्रा के भीतर समझें। जैसे सारे ; सारेग ;

सारेगम इत्यादि।

(५) ⌢ — दो या उससे अधिक स्वरों पर यह धनुषाकृति रहने पर उन्हें मीड़ द्वारा गाना होगा। जैसे—

सारे ; सारेग इत्यादि।

(६) - — जिस स्वर के बाद - यह चिह्न रहे उसका स्थायित्व दो मात्रा होगा, जैसे सा -। सा - - होने पर तीन मात्रा होगा। अर्थात् ऐसे प्रत्येक चिह्न के लिये एक मात्रा का स्थायित्व मानना चाहिये।

(७) ऽ — ऽ यह चिह्न गीत के किसी शब्द के बाद रहे तो उस शब्द के अन्त्यस्थ स्वर-वर्ण (अ-कार, इ-कार, उ-कार इत्यादि) का उच्चारण करके निर्देशित मात्रा के अनुसार गाना चाहिये।

(८) रे^ग म^ग — किसी स्वर के ऊपर छोटे अक्षर में लिखे हुए अलंकारिक स्वर को 'कण' कहते हैं। ऐसे स्वर प्रधान स्वर के आगे हों चाहे पीछे, वहाँ क्षणकाल के लिये उन्हें स्पर्श करना पड़ता है।

(९) [ ] — यह निशान रहे तो स्वरों की पुनरावृत्ति करनी चाहिये।

(१०) { } — पुनरावृत्ति के समय ऐसा निशान भी रहे तो उसके अन्तर्गत स्वरों की पुनरावृत्ति नहीं होगी। जैसे:—

[सा रे ग म | {प ध नि सां}]

लेकिन इसी निशान के अन्तर्गत स्वरों पर यदि दूसरे स्वर लिखे हों तो पुनरावृत्ति के समय उन्हें गाना चाहिये। जैसे:—

[सा रे ग म | {प नि ध प / प ध नि सां}]

(११) ∧ | ∨ — गीत की पंक्ति के अन्त में यह निशान रहे तो उस पंक्ति का वहीं अन्त समझना चाहिये। वहाँ से पुनः स्थायी पर लौट सकते हैं अथवा गीत के आगे का हिस्सा शुरू कर सकते हैं।

(१२) , — कॉमा चिह्न के द्वारा किसी गीत की पंक्ति के छन्द में जो विराम दिखाया गया है, वह समय का नहीं बल्कि भाव का है।

(१३) × — यह निशान स्वरलिपि के नीचे रहे तो वहाँ से 'सम' (ताल का प्रारम्भ) मानना चाहिये।

० — यह चिह्न खाली का है।

२, ३ — इत्यादि द्वारा सम-खाली के अलावा दूसरे ताल निर्दशित होंगे।

(१४) | — इस लम्बी रेखा के द्वारा ताल का विभाजन दिखाया गया है। जैसे:—

सा	रे	ग	रे	ग	म
×			०		

रवीन्द्र संगीत

स्वरूप

	गीत	राग	पृ० सं०
१	अरी बधू सुन्दरी	कालिंगड़ा-रामकली	७०
२	अरे आओ रे	अड़ाना-बहार, मिश्र	७७
३	आज वर्षण मुखरित	पंचम वसंत मिश्र	४७
४	आज वसंत जाग्रत	बहार मिश्र	६२
५	उस आसन तले	कीर्तनांग	१०६
६	ओ भुवन मन मोहिनी	भैरव भैरवी मिश्र	२१
७	ओरे गृहवासी	कल्याण प्रकार	६७
८	झरे-झरे-झरे-रंग का झरना	बहार अड़ाना मिश्र	७३
९	तुम कुछ दे जाओ	पीलू खम्माज	९३
१०	तुम्हारे असीम में	बिहाग	१०६
११	दूर गाँव से	माँड मिश्र	८१
१२	ध्वनित आह्वान	खट मिश्र	२५
१३	नमो नमो नमो करुणाघन	गौड़मल्लार मिश्र	४४
१४	प्रखर तपन ताप से	भीमपलासी, मुलतानी, भैरवी मिश्र	३३
१५	बादल धारा चली गई	पीलू मिश्र	५५
१६	बादल बाउल बजा रहा रे	बिहाग, खम्माज	३७
१७	मेरा मन मेघ का साथी	मल्हार मिश्र	५१
१८	मेरे मिलन के लिये तू	बागेश्री बहार	८६
१९	मेरी मुक्ति आलोक में रे	केदार	११४
२०	वायु बहे जोर-जोर	यमन-भूपाली	८५
२१	वीणा मेरी कौन सुर गावे	भैरवी मिश्र	२९
२२	शरत आलोक के	कालिंगड़ा-रामकली मिश्र	५९
२३	सावन गगन में घोर घनघटा	एक प्रकार की सावनी मल्लार	४१
२४	हिंसा से मत्त पृथ्वी	भैरवी-मिश्र	९६
२५	होगी जय, होगी जय	आसावरी-भैरवी मिश्र	१०१
२६	परिशिष्ट		११७

भैरव भैरवी मिश्र

कहरवा या त्रिताल (मध्यलय)

ओ भुवन–मनमोहनी ओ भुवन–मनमोहिनी मा !

ओ निर्मल सूर्य करोज्वल धरणी जनक जननी ॥

नील-सिंधु जल धौत चरण-तल अनिल विकम्पित श्यामल अंचल,

अंबर चुम्बित भाल–हिमाचल शुभ्र तुषार किरीटिनी ।

प्रथम प्रभात उदय तव गगन में प्रथम सामरव तव तपोवन में,

प्रथम प्रचारित तव वन-भवन में ज्ञान-धर्म बहु काव्यकाहिनी ॥

चिरकल्याणमयी तुम धन्य हो, देश–विदेश में अन्नदायी हो,

जाह्नवी यमुना विगलित करुणा पुण्य पीयूषस्तन्यवाहिनी ॥

| म ग
| ओ ऽ

नि
मग मनि निध ध | प मग म प | ध – – – | – – प मग
भुऽ वऽ नऽ म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ओ ऽऽ
× | ० | × | ०

नि
मग मनि निध ध | प मग म प | ध – – – | – – – –
भुऽ वऽ नऽ म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

ध नि सां – | ध निसां रें – | धनि सांरें गं – | – – – –
मा ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

नि
रें सां नि ध | प मग म प | ध – – – | – – सा रे
भु व न म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ओ ऽ
| ० | × | ०

ग ग ग रे | ग – ग रे | ग रे ग म | ग रे सा –
नि र म ल | सू ऽ र्य क | रो ऽ ज्व ल | ध र णी ऽ
× | ० | × | ०

मा सांनि सां सांरें | निसां ध प ध | नि ध – – | धनि सांरें सां सां
ज नऽ क जऽ | नऽ नी ज न | नी ऽ ऽ ऽ | ऽऽ ऽऽ ओ ऽ
× | ० | × | ०

नि
नि पनि ध ध | प मग म ग | ध – – – | – – – –
भु वऽ न म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

ध - ध ध | ध नि ध नि | सा - रे नि | सा सा सा सा
नी ऽ ल सि | न् धु ज ल | धौ ऽ त च | र ण त ल
× | ० | × | ०

ध गं रें गं | गं रें रें सां | नि - सां रें | सां नि ध प
अ नि ल वि | क ऽ म्पि त | श्याम ऽ म ल | अं ऽ च ल
× | ० | × | ०

सा
ध ध ध ध | ध - ध ध | पध निसां सां नि | धप नि ध प
अ म् ब र | चु ऽ म्बि त | भाऽ ऽऽ ल हि | माऽ ऽ च ल
× | ० | × | ०

सा - सा सा | ध - नि सां | ध - ध नि | सांगं रें रें सां
शु ऽ भ्र तु | षा ऽ र कि | री ऽ ऽ टि | नीऽ ऽ ओ ऽ
× | ० | × | ०

नि
नि पनि ध ध | प मग म प | ध - - - | - - - -
भु वऽ न म | न ऽऽ मो हि | नी ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

सा सा सा सा | ग - ग ग | ग ग गरे ग | म म म पम
प्र थ म प्र | भा ऽ त उ | द य तऽ व | ग ग न मेंऽ
× | ० | × | ०

ग ग रे ग | - ग रे ग | रे ग म ग | रेग रे सा -
प्र थ म सा | ऽ म र व | त व त पो | वऽ न में ऽ
× | ० | × | ०

नि़ सा सा सा | ध - ध ध | प ध प नि | ध ध प प
प्र थ म प्र | चा ऽ रि त | त व व न | भ व न में
× | ० | × | ०

ग - म म | - नि ध प | ग - म ग | रेग रे सा -
आ ऽ न ध | ऽ में व हु | का ऽ व्य का | ऽऽ हि नी ऽ
× | ० | × | ०

धु ध ध नि	धनि सांरें गं रें	रें सां सां नि	सां - सां सां
चि र क ऽ	ल्याऽ ऽऽ ण म	यी ऽ तु म	ध ऽ न्य हो
×	०	×	०

(सां) ध गं गं रें	गं - रें सां	नि सां रें सां	सां नि नि ध
दे ऽ श वि	दे ऽ श में	श्र ऽ न्न दा	ऽ यी हो ऽ
×	०	×	०

पध निसां नि नि	ध ध प मग	म प ,,प प	पम प (नि)ध -
जाऽ ऽऽ ह्न वी	य मु ना ऽऽ	वि ग लि त	कऽ रु णा ऽ
×	०	×	०

सा - सा ध	- ध ध -	ध नि सां ध	नि सां गं रें
पु ऽ ण्य पी	ऽ यू ष ऽ	स्त ऽ न्य वा	ऽ हि नी ऽ
×	०	×	०

सां (नि)सां नि ध	प मग म प	(नि)ध - - -	- - - -
भु व न म	न ऽऽ मो हि	नी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

इच्छानुसार गीत की प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति कर सकते हैं।

खट मिश्र

तीव्रा (मध्यलय)

ध्वनित आह्वान मधुर गंभीर प्रभात अंबर में,
शांति-संगीत बाजे चतुर्दिक भुवन मंदिरों में
अंतर में देखो महारूप को निखिल भुवन के परम बंधु को,
आओ आनन्दित शोभन साज से मिलन अंगन में।
कलुष कल्मष विरोध विद्वेष होये निर्मल होये निःशेष-
चित्त की बाधा दूर होये नित्य कल्याण काज में
मधुर स्वर में गाओ विहंगम पूर्व-पश्चिम बंधु-संगम,
मैत्री-बंधन पुण्यमय हो पवित्र विश्व-समाज में।

सा रे म	म –	मग म	प प प	प प	प प
ध्व नि त	आ ऽ	ह्वा न	म धु र	ग म्	भी र
×	२	३	×	२	३
धु धु धु	धु सां	सां सां	नि प धु	नि –	धु –
प्र भा त	अ म्	ब र	में ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३
प धु प	पनि –	धु धु	प धु प	पधु प	म म
शा ऽ न्ति	संऽ ऽ	गी त	बा जे च	तुऽ र	दि क
×	२	३	×	२	३
ग ग रे	ग म	प म	ग रे –	सा –	– –
भु व न	मं ऽ	दि ऽ	रों ऽ ऽ	में ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३
सा रे म	म –	– –	ग म प	धु –	– –
ध्व नि त	रे ऽ	ऽ ऽ	ध्व नि त	रे ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

उपर्युक्त गीत की पुनरावृत्ति करके नीचे गायें ।

धु धु धु	धु सां	सां सां	सां सां ऽ	सां –	सां सां
अ न्त र	में ऽ	दे खो	म हा ऽ	रू ऽ	प को
×	२	३	×	२	३
सां रें रें	सांरें गं	रें सां	नि सां रेंसां	निसां नि	धु प
नि खि ल	भुऽ व	न के	प र मऽ	बंऽ ऽ	धु को
×	२	३	×	२	३
गं गं गं	गं रें	गं गं	गंरें मं गं	रें –	सां सां
आ ओ आ	न न्	दि त	शोऽ भ न	सा ऽ	ज से
×	२	३	×	२	३

रें॒	सां	सां	नि॒	–	ध॒	प	ग	म	प	ध॒	–	–	–
मि	ल	न	अं	ऽ	ग	न	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	रे॒	म	म	–	म	–	ग	म	प	ध॒	–	–	–
ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ध्व	नि	त	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

सांग॒	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒	ग॒रें	ग॒	ग॒मं	मं	ग॒	रें॒	–	सां	सां
कऽ	लु	ष	क	लु	मऽ	ष	विऽ	रो	ध	वि	ऽ	द्वे	ष
×			२		३		×			२		३	

सां रें॒	रें॒	सां	रें॒	रें॒	सां	सां	सांरें॒	सां	सां	नि॒	–	ध॒	प
हो	ऽ	ये	नि	र्	म	ल	होऽ	ऽ	ये	निः	ऽ	शे	ष
×			२		३		×			२		२	

रें॒	–	सां	रें॒	–	सां	सां	रें॒	–	सां	नि॒	नि॒	ध॒	प
चि	ऽ	त्त	की	ऽ	बा	धा	दू	ऽ	र	हो	ऽ	ये	ऽ
×			२		३		×			२		३	

प	नि॒	ध॒	प	–	म	पम	ग	–	रे॒	सा	–	–	–
नि	ऽ	त्य	क	ऽ	ल्या	णऽ	का	ऽ	ज	में	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

ध॒	ध॒	ध॒	नि	नि	सां	सां	रें॒	रें॒	सां	नि	–	सां	सां
म	धु	र	स्व	र	में	ऽ	गा	ओ	वि	हं	ऽ	ग	म
×			२		३		×			२		३	

! धु धु	नि नि	सां सां	निसां रें सां	सां नि -	धु प
पू र् व	प शू	चि म	बऽ न् धु	सं ऽ	ग म
×	२	३	×	२	३

प गं गं	गं रें	गं गं	मंगं - गं	रें रें	सां सां
मै ऽ त्री	ब न्	ध न	पुऽ ऽ ण्य	म य	हो प
×	२	३	×	२	३

रें सां सां	नि -	धु प	ग म प	धु -	- -
वि ऽ त्र	वि ऽ	श्व स	मा ऽ ज	में ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

सा रे म	म -	- -	ग म प	धु -	- -
ध्व नि त	रे ऽ	ऽ ऽ	ध्व नि त	रे ऽ	ऽ ऽ
×	२	३	×	२	३

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

भैरवी–मिश्र

त्रिताल या कहरवा (मध्य–द्रुतलय)

बीणा मेरी कौन सुर गावे कौन नव राग सुनाये रे ।

मन में शंका क्यों लावे चमकित् भुवन सारा रे ॥

आया कौन राग आलाप के अंचल उसका डोले–

चरण नूपुर मदहोश उसके हुए हैं अब वे होले रे ॥

अंबर प्रांगन के आगे निःस्वर मंजिर बाजे ।

अश्रुत करताली जागे नवस्वर मानो साजे ॥

किसके परस की आशा तृणों में जागी भाषा ।

पवन भी बंधन तोड़े मचले किसके इशारे रे ।

														सा	नि
														वी	ऽ

		धु		म						धु					
ध	-	प	म	ध	ध	प	म	म	ध	प	-	-	-	-	-
णा	ऽ	मे	री	कौ	न	सु	र	गा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

											म				
पसां	सां	नि	ध	प	प	म	ग	ग	म	म	ग	रे	-,	सा	नि
कौऽ	न	न	व	रा	ऽ	ग	सु	ऽ	ना	ऽ	ये	रे	ऽ,	वी	ऽ
×				२				०				३			

		धु		म						धु					
ध	-	प	म	ध	ध	प	म	म	ध	प	-	-	-,	सा	रे
ना	ऽ	मे	री	कौ	न	सु	र	गा	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ,	म	न
×				२				०				३			

रे						गु				म					
ग	-	सा	रे	ग	-	सा	रे	ग	रे	ग	ग	-	-	-	-
में	ऽ	शं	ऽ	का	ऽ	क्यों	ऽ	ऽ	ला	ऽ	वे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

रे	ग	म	प	ध	ध	नि	नि	नि	-	सां	-	सां	-,	सा	नि
च	म	कि	त	भु	ऽ	व	न	सा	ऽ	रा	ऽ	रे	ऽ,	“वी	ऽ”
×				२				०				३			

“वीणा मेरी कौन सुर गावे” को दो बार गाने के बाद आगे गायें।

												नि			
ध	ध	ध	नि	नि	सां	सां	सां	रें	सां	नि	प	सां	-	सां	रें
आ	या	कौ	न	रा	ऽ	ग	आ	ला	ऽ	ऽ	प	के	ऽ	अं	ऽ
×				२				०				३			

		गं		रें				रें		गं					
गं	गं	सां	रें	गं	-	सां	रें	गं	-	रें	-	सां	-	-	-
च	ल	उ	स	का	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

सां	सांगं	रें	सां	नि	नि	ध	म	ध	–	नि	नि	सांगं	–	–	–
च	रऽ	ण	नू	पु	र	म	द	हो	श	उ	स	केऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

								ग							
सांगं	रें	सां	नि	ध	प	म	ग	म	–	ग	–	रे	–	सा	नि
हुऽ	ये	हैं	ऽ	अ	ब	वे	ऽ	हो	ऽ	ले	ऽ	रे	ऽ	"वी	ऽ"
×				२				०				३			

पूर्व उल्लेखित अंश की पुनरावृत्ति करें।

सा	प	प	प	प	–	प	प	प	म	प	म	ध	–	–	प
अं	ऽ	ब	र	प्रां	ऽ	ग	न	के	ऽ	आ	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				•				३			

				ग				रे							
मप	–	ग	ग	म	म	ग	रे	ग	रे	सा	–	–	–	–	–
निःऽ	ऽ	स्व	र	मं	ऽ	जी	र	बा	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

						सा									
ग	–	ध	नि	सा	सा	रे	नि	सा	रे	ग	–	सा	रे	ग	–
अ	ऽ	श्रु	त	क	र	ता	ली	जा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				•				३			

			ग			रे	म	रे							
सा	रे	ग	रे	सा	रे	म	ग	ग	रे	सा	–	–	–	–	–
न	व	स्व	र	मा	ऽ	नो	ऽ	सा	ऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

				सां				सां							
गं	गं	रें	सां	ध	ध	नि	सां	रें	नि	सां	–	–	–	–	सां
कि	स	के	ऽ	प	र	स	की	आ	ऽ	शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तृ
×				२				०				३			

सां				सां				सां							
रें	–	सां	नि	ध	ध	नि	सां	रें	नि	सां	–	सां	रें	गं	मं
ष्णों	ऽ	में	ऽ	जा	ऽ	गी	ऽ	भा	ऽ	षा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

				सां				सां							
गं	गं	रें	सां	ध	ध	नि	सां	रें	नि	सां	-	-	-	-	सां
कि	स	के	ऽ	प	र	श	की	आ	ऽ	शा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तृ
×				२				०				३			

सां				सां				सां							
रें	-	सां	नि	ध	ध	नि	सां	रें	नि	सां	-	-	-	-	सां
णों	ऽ	में	ऽ	जा	ऽ	गी	ऽ	भा	ऽ	षा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प
×				२				०				३			

सां				रें						रें					
गं	गं	गं	रें	गं	गं	गं	रें	गं	रें	गं	रें	मं	-	-	-
ब	न	भी	ऽ	बं	ऽ	ध	न	तो	ऽ	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

		मं		रें										“⌒	”	∧
मं	मं	गं	गं	गं	गं	रें	रें	रें	-	सां	-	सां	-,	सा	नि	|
म	च	ले	ऽ	कि	स	के	ऽ	शा	ऽ	रे	ऽ	रे	ऽ,	“वी	ऽ”	|
×				२				०				३				∨

गीत की पहली दो पंक्तियाँ गायें।

भीमपलासी, मुलतानी, भैरवी मिश्र

एकताल—(विलम्बित लय)

प्रखर तपन ताप से, आकाश काँपे तृषा से,

वायु करे हाहाकार।

दीर्घ पथ के शेष में, पुकारा मंदिर में,

'खोलो-खोलो-खोलो द्वार ॥'

सुन किसकी पुकार

कब हुआ हूँ बाहर,

अभी मलिन होगा प्रभात का फूलहार।

खोलो-खोलो-खोलो द्वार ॥

मन में बाजे आशाहीना, क्षीण मर्मर वीणा।

यह न जानूँ कोई है या ना, पाऊँगा उसका सार ॥

आज सारे दिन मेरे, प्राण में ये सुर भरे।

अकेला कैसे वहूँ गान का भार।

खोलो-खोलो-खोलो द्वार ॥

* ग॒	रे	सा	नि॒	सा	म	मप	ग॒म	पम	(म)प	-	-
प्र	ख	र	त	प	न	ताऽ	ऽऽ	ऽप	से	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

साप	प	प	मं	प	-	पध॒	पध॒प	मंप	मग॒	म	ग॒
आऽ	का	श	काँ	पे	ऽ	तृऽ	षाऽऽ	ऽऽ	सेऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

ग॒	ग॒	म	प	प	नि	नि	नि	सां	सां	-	सां
वा	यु	ऽ	क	रे	ऽ	हा	हा	ऽ	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

सां	गं॒	गं॒	रें	सां	सां	सांरें	(रें)सां	सां	नि॒	नि॒	-
दी	ऽ	ह	प	थ	के	शेऽ	ष	में	ऽ	पु	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि॒	-	नि॒	नि॒सां	(सां)नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	प	प	प	नि॒
का	ऽ	रा	ऽऽ	म	न्दि	र	में	ऽ	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(नि॒)ध॒	नि॒	-	नि॒सां	सां	नि॒	ध॒	प	प	-	-	-
खो	लो	ऽ	खोऽ	लो	ऽ	द्वा	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

"प्रखर तपन ताप से" तक पुनरावृत्ति करें।

प	-	प	(प)म	ग॒	म	प	नि	नि	सां	-	सां
सु	ऽ	न	कि	ऽ	स	की	ऽ	पु	का	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

* पुनरावृत्ति के समय "प्रखर" शब्द को "मग॒" गायें

सां	नि॒	गुं	रें	-	सां	(॑)नि	सां	-		-	नि॒
क	ब	हु	आ	ऽ	हूँ	बा	ऽ	ऽ	ह	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

नि॒सां	-	नि॒	नि॒	ध॒	ध॒	ध॒	प	-	-	-	-
अऽ	ऽ	भी	म	लि	न	हो	गा।	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प	प	प	प	पध॒	प	(प)मं	प	ग॒	मं	प	ध॒
प्र	भा	त	का	फुऽ	ल	हा	ऽ	र	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

मं	प	ग॒	मं	प	ध॒	(ध॒)मं	प	-	-	-	प
खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

सासा	प	पध॒	प	म	ग॒रे	(रे)ग॒	-	रे	मग॒	-	रे
मन	में	बाऽ	जे	आ	शाऽ	हीं	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सा	रे	ग॒	ग॒	ग॒	म	(म)ग॒	-	रे	सा	-	-
क्षी	ण	म	र	म	र	वी	ऽ	ऽ	णा	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सासा	साप	प	प	प	पम	प	-	ध	धनि॒	-	(नि)ध
यह	नऽ	जा	नूँ	को	ईऽ	है	ऽ	या	नाऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(ध)प	ध	(ध)प	मम	ग॒	म	प	-	-	-	-	प
पा	ऊँ	ना	उस	का	ऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

प	प	प	म	(म) ग̲	म	प	पनि	–	नि	सां	सां
आ	ज	सा	रे	दि	न	मे	रेऽ	ऽ	प्रा	ऽ	ण
×		०		२		०		३		४	

सां	नि̲	गं̲	रें	सां	रेंसां	(सां) नि	सां	–	नि̲	–	–
में	ऽ	ये	सु	ऽ	रऽ	भ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि̲सां	सां	नि̲	नि̲	नि̲	ध̲	ध̲	ध̲	प	प	प	–
अऽ	के	ला	कैं	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	व	हूँ	ऽ
×		०		२		०		३		४	

प	–	ध	नि̲	सां	(सां) नि̲	सांरें	(रें) सां	नि̲	ध̲	प	ध̲
गा	ऽ	न	का	ऽ	ऽ	भाऽ	ऽ	र	खो	लो	ऽ
×		०		२		०		३		४	

(ध) म॑	प	ग̲	म॑	प	ध̲	(ध̲) म॑	प	–	–	–	प
खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	द्वा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×		०		२		०		३		४	

"प्रखर तपन........खोलो द्वार" तक पुनरावृत्ति करें।

विहाग, खम्बाज

कहरवा (मध्यलय)

बादल बाउल बजा रहा रे इकतारा ।
सारी बेला झरे झर-झर-झर धारा ॥
जामुन वन में धान खेत में,
आप मत्त अपने तानों में,
नाचत नाचत बावला हारा ॥
घनी जटा से घनाधार नभ में स्वर साजे ।
पात-पात पर टुप-टुप ध्वनि का नुपूर मधुर बाजे ॥
घर-बार छुड़ाता आकुल सुर में,
उदास घूमें पुर-पुर में,
पुरवैया में गृह हारा ॥

								प				म			
सा	–	ग	ग	ग	म	धप	प	ग	ग	म	म	ग	–	पम	ग
बा	ऽ	द	ल	बा	ऽ	उऽ	ल	ब	जा	ऽ	र	हा	ऽ	रेऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग			प	म								नि		नि	
रे	रे	गप	म	ग	–	–	–	गप	मं	प	नि	ध	नि	प	प
ब	जा	ऽऽ	र	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बऽ	जा	ऽ	र	हा	ऽ	ए	क
×				०				×				०			

				प											
प	ध	म	प	ग	म	रे	ग	सा	–	ग	ग	ग	म	धप	प
ता	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	द	ल	बा	ऽ	उऽ	ल
×				०				×				०			

प				म				ग			प	म			
ग	ग	म	म	ग	–	पम	म	रे	रे	गप	म	ग	–,	प	–
ब	जा	ऽ	र	हा	ऽ	रेऽ	ऽ	ब	जा	ऽऽ	र	हा	ऽ,	सा	ऽ
×				०				×				०			

प	नि	–	नि	नि	सां	–	सांनि	धनि	–	प	–	–	–	प	मं
री	ऽ	ऽ	बे	ला	ऽ	ऽ	झऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	झ	र
×				०				×				०			

		सां		नि		नि						प			Δ
प	सां	नि	सां	ध	नि	प	–	प	ध	म	प	ग	म	रे	ग
झ	ऽ	र	ऽ	झ	ऽ	र	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			V

"बादल बाउल बजा रहा रे" तक पुनरावृत्ति करें।

					नि										
प	मं	ध	प	पनि	ध	नि	–	निसां	–	सां	–	सां	सां	सां	–
जा	ऽ	मु	न	बऽ	न	में	ऽ	धाऽ	ऽ	न	ऽ	खे	त	में	ऽ
×				०				×				०			

				नि											
पसां	–	सां	नि	ध	नि	सां	सां	सां	नि	रें	सांनि	धनि	नि	धप	–
आऽ	ऽ	प	म	ऽ	त्त	आ	ऽ	प	ऽ	न	ऽऽ	ताऽ	नों	मेंऽ	ऽ
×				०				×				०			

								ध		ध		प		म	
प	सां	-	नि़	नि़	-	नि़	ध	प	ध	प	प	म	पम	ग	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ना	ऽ	च	त	ना	ऽ	च	त	ना	ऽऽ	च	त
×				०				×				०			

सा	सा	ग	-	ग	म	प	-
बा	व	ला	ऽ	हा	ऽ	रा	ऽ
×				०			

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

						सा								रे	
सा	सा	-	सा	सा	-	नि़	-	सा	सा	रे	रे	रे	-	सा	नि़
घ	नी	ऽ	ज	टा	ऽ	से	ऽ	घ	नां	ऽ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	र
×				०				×				०			

सा	सा	ग	ग	गम	म	प	म	गम	रे	ग	-	-	-	-	-
न	भ	में	ऽ	स्वर	ऽ	सा	ऽ	जेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

										नि		ध			
गप	म॑	प	म॑	म॑प	म॑प	ग	म॑	प	नि	ध	ध	प	म॑	प	-
पाऽ	ऽ	त	पा	ऽऽ	ऽत	प	र	ढु	प	ढु	प	ध्व	नि	का	ऽ
×				०				×				०			

प		ध		प				ग		म					
म॑प	ध	प	प	म	-	ग	ग	रे	पम	ग	-	-	-	-	-
नूऽ	ऽ	पु	र	म	ऽ	धु	र	रा	ऽऽ	जे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

			गं												
गंसां	सां	गं	रें	रें	-	सां	-	सां	-	सां	सां	सां	सां	सां	नि
घर	बा	र	छु	ड़ा	ऽ	ता	ऽ	आ	ऽ	कु	ल	सु	र	में	ऽ
×				०				×				०			

नि								नि							
ध	नि	सां	-	सां	-	सां	नि	ध	नि	सां	नि	धनि	नि	धप	-
ख	ऽ	दा	ऽ	स	ऽ	धू	ऽ	में	ऽ	पु	र	पुऽ	र	मेंऽ	ऽ
×				०				×				०			

			सां	नि											
नि	नि	निसां	नि	ध	नि	धप	-	प	सां	-	-	नि	-	-	ध
पु	र	वैऽ	ऽ	या	ऽ	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध				प			
प	-	ध	प	म	-	प	-
गृ	ऽ	ह	ऽ	हा	ऽ	रा	ऽ
×				०			

गीत की प्रथम दो पंक्तियाँ गायें।

एक प्रकार की सावनी मल्लार

त्रिताल (मध्यलय)

सावन गगन में घोर घन घटा निशीथ यामिनी रे।

कुंजवन सखि कैसे जाऊँ अबला कामिनी रे॥

उन्मद पवन यमुना तर्जित, घन-घन गर्जित मेह।

विद्युत दमकत पथतरु लुंठित, थर-थर कम्पित देह॥

घन-घन रिमझिम् रिमझिम् रिमझिम् बरसत नीरद पुंज।

शाल पियाले, ताल-तमाले निविड़ तिमिरमय कुंज॥

कह रे सजनी ए दुख योगे कुंजे निरदय कान।

दारुण बंशी काहे बजावत, सकरुण राधा नाम॥

मोतीहार से वेश बनादे, सींथि लगा मेरे भाले।

उड़त बिलुंठित लोल-चिकुर मम बाँधह चम्पक माले॥

गहन रात में न जाओ बाला, नवलकिशोर के पास।

गरजे घन-घन, बहु डर पावत, कहे भानु तव दास॥

		प		प				रे							
रे	प	म	प	ग	रे	मग	रे	सा	रेग	गरे	सा	रे	नि	सा	–,
सा	ऽ	व	न	ग	ग	ऽन	में	घो	ऽऽ	रऽ	घ	न	घ	टा	ऽ,
×				२				०				३			

								नि							
म	म	प	प	प	म	मनि	नि	ग	–	–	–	रे	सा	रे	–
नि	शी	ऽ	थ	या	ऽ	मिऽ	नी	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

								प		नि		नि			
म	प	ध	प	प	–	प	प	नि	–	ध	नि	ध	नि	ध	प
कुं	ऽ	ज	व	न	ऽ	स	खि	कै	ऽ	से	ऽ	जा	ऽ	ऊँ	ऽ
×				२				०				३			

म	म	प	म	प	–	प	पसां	निसां	निसां	नि	ध	प	म	गरे	सा
अ	ब	ला	ऽ	का	ऽ	मि	नीऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

"सावन·····निशीथ यामिनी रे" पुनरावृत्ति करें।

												रें			
म	प	प	प	प	प	प	नि	नि	नि	नि	सां	सां	–	सां	सां
उ	न	म	द	प	व	ने	ऽ	य	मु	ना	ऽ	त	ऽ	जि	त
×				२				०				३			

								ध				ध			
म	म	प	प	प	–	प	ध	नि	–	धप	ध	प	–	–	–
घ	न	घ	न	ग	ऽ	र्जि	त	मे	ऽ	ऽऽ	ऽ	ह	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

म	प	प	प	प	प	प	प	म	प	प	पनि	नि	सां	सां	सां
वि	द्	यु	त	द	म	क	त	प	थ	त	रुऽ	लु	ण	ठि	त
×				२				०				३			

		रें						ध				प			
नि	निरें	सां	नि	ध	ध	प	पध	म	–	पधप	मप	ग	–	–	–
थ	रऽ	थ	र	क	म्	पि	तऽ	दे	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ह	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	म	म	म	म	पम	ग	म	म
घ	न	घ	न	रि	म्	झि	म्	रि	म्	झि	म्	रिऽ	म्	झि	म्
×				२				०				३			

								ध				प			
ग	म	प	प	प	–	प	पध	म	–	पधप	मप	गु	–	रेसा	रे
ब	र	ष	त	नी	ऽ	र	दऽ	पुं	ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ	ज	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				२				०				३			

				ग						प					
ग	–	ग	ग	म	ग	म	–	गम	प	म	गुरे	मगु	रे	सा	–
शा	ऽ	ल	पि	या	ऽ	ले	ऽ	ताऽ	ऽ	ल	तऽ	माऽ	ऽ	ले	ऽ
×				२				०				३			

		प		प		गु									
रे	प	म	प	म	मगु	रे	सा	रेसा	नि़	सा	–	–	–	–	–
नि	वि	ड़	ति	मि	रऽ	म	य	कुंऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

												रें			
म	प	प	नि	नि	नि	नि	–	पनि	–	सां	रें	नि	–	सां	–
क	ह	रे	ऽ	स	ज	नि	ऽ	एऽ	ऽ	दु	रु	यो	ऽ	गे	ऽ
×				२				०				३			

				सां											
सां	रें	सांरें	सां	ऩि	ऩि	धप	ध	सांनि	–	धप	ध	प	–	–	–
कुं	ऽ	जेऽ	ऽ	नि	र	दऽ	य	काऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			

										नि		सां			
म	प	प	प	प	प	प	म	प	ऩि	ध	ऩि	ऩि	–	धु	प
दाऽ	ऽ	रु	ण	वं	ऽ	शी	ऽ	का	ऽ	हे	ब	जा	ऽ	ब	त
×				२				०				३			

प				ध				प							
म	म	प	पध	म	–	पध	मप	गु	–	–	–	रे	–	सा	–
ब	क	रु	णऽ	रा	ऽ	धाऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ
×				२				०				३			

सानि़ – प़ नि़ | नि़ सा सा सा | सानि़ – प़ नि़ | नि़ सा सा –

मोऽ ऽ ती ऽ | हा ऽ र से | वेऽ ऽ श ब | ना ऽ दे ऽ

× | २ | ० | ३

सानि़ – सा रे | रे – रे सा | रेसा रे (म)ग॒ – | – – – –

भींऽ ऽ थि ल | गा ऽ मे रे | भाऽ ऽ ले ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ

× | २ | ० | ३

म म प प | प – प प | म प प पनि॒ | पनि॒ नि॒ प प

उ ड़ त वि | लुं ऽ ठि त | लो ऽ ल चिऽ | कुऽ र म म

× | २ | ० | ३

(प)म – प प | पसां सां (म)ग॒ ग॒म | (म)ग॒ – – म | रे ग॒ सा –

बाँ ऽ ध ह | चऽ मू प कऽ | मा ऽ ऽ ऽ | ले ऽ ऽ ऽ

× | २ | ० | ३

म प पनि नि | नि नि नि – | (नि)प नि – सांरें | (रें)नि – सां –

ग ह नऽ रा | ऽ त में ऽ | न जा ऽ ओऽ | बा ऽ ला ऽ

× | २ | ० | ३

सां नि(रें)रें सां नि॒ध | नि॒ – धप ध | सांनि॒ – – ध | प – – –

न वऽ ल किऽ | शो ऽ रऽ के | पाऽ ऽ ऽ ऽ | स ऽ ऽ ऽ

× | २ | ० | ३

पनि॒ नि॒ नि॒ – | (नि॒)ध नि॒ (नि॒)धप ध | ध रें (रें)सां रें | (रें)नि॒ – ध प

गऽ र जे ऽ | घ न घऽ न | ब हु ह र | पा ऽ व त

× | २ | ० | ३

(प)म म – प | – प पध (ध)प | (म)ग॒ – – – | रे – सा –

क हे ऽ भा | ऽ नु तऽ ब | दा ऽ ऽ ऽ | स ऽ ऽ ऽ

× | २ | ० | ३

[illegible] खित पुनरावृत्ति करें ।

गौड़मल्हार मिश्र

कहरवा या त्रिताल (मध्यलय)

नमो नमो नमो करुणाघन नमो हे ।

नयन स्निग्ध अमृतांजन सरसे ।

जीवन पूर्ण सुधा रस बरसे ॥

तव दर्शन धन-सार्थक मन हे ।

अकृपण वर्षन करुणा घन हे ॥

												प			
म	रे	म	म	प	प	म	प	पसां	निसां	ध	प	म	प	म	-
न	मो	न	मो	न	मो	क	रु	णाऽ	ऽऽ	घ	न	न	मो	हे	ऽ
×				०				×				•			

										प					
-	-	-	ग	रे	ग	रे	-	रे	प	म	-	गरे	ग	रेसा	-
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	म	हे	ऽ	न	म	हे	ऽ	नऽ	म	हेऽ	ऽ
×				०				×				०			

म	प	प	पनि	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नि	सां	-
न	य	न	स्निऽ	ग्	ध	अ	मृ	ता	न्	ज	न	स	र	से	ऽ
×				०				×				०			

सां	ध	ध	ध	धसां	सां	सां	सां	सां	निरें	सां	सां	निसां	ध	प	-
जी	ऽ	व	न	पूऽ	र	ण	सु	धा	ऽऽ	र	स	बऽ	र	से	ऽ
×				०				×				०			

पमं	ध	प	प	म	म	म	ग	रे	प	प	प	प	मं	प	-
तऽ	व	द्	र	श	न	घ	न	सा	र्	थ	क	म	न	हे	ऽ
×				०				×				•			

ध	नि	सां	नि	ध	नि	ध	प	रे	ग	म	धप	म	ग	रेसा	-
अ	कृ	प	ण	ब	र्	घ	न	क	रु	णा	ऽऽ	घ	न	हेऽ	ऽ
×				०				×				•			

						प									
मा	रे	रे	-	रे	प	म	-	गरे	ग	रेसा	-	-	-	-	-
न	मो	हे	ऽ	न	मो	हे	ऽ	नऽ	मो	हेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				•			

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

पंचम वसंत मिश्र

कहरवा (मध्यलय)

आज वर्षण मुखरित श्रावण रजनी ।
स्मृति वेदन की माला गाँथू एकाकिनी ॥
आज कौन भ्रम में भूलूँ ।
अंधार घर का यह द्वार खोलूँ ॥
मानो वह आ रहा है ।
मेरा साथी, यह दुख यामिनी ॥
आरहा वह, धारा जल में, सुर लगाये ।
नीपवन पुलक जगाये ॥
यदि वह न आये और ।
वृथा आश्वास की डोर ।
धूलि पै फैला मिलन-आसन बीते रे निशीथिनी ॥

														ध	नि
														आ	ज
												०			

सां	सांगं	गं	गंरें	रें	रेंसां	सां	-	म	-	-	-	-	-	-	-
व	रऽ	ष	ण	मु	खऽ	रि	ऽ	त	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	म	प	म	ग	म	प	(प) म	ग	रे	सा	-	-	-	-	-
आ	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	ऽ	ण	र	ज	नी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सा	साम	म	म	म	म	म	-	म	प	ग	-	म	ध	ध	-
स्मृ	तिऽ	वे	द	न	की	मा	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	गाँ	थू	ए	ऽ
×				०				×				०			

नि	-	सां	रें	नि	सां	ध	नि
का	ऽ	कि	ऽ	नी	ऽ	"आ	ज"
×				०			

"आज ······ रजनी" तक पुनरावृत्ति करें।

														सां	रें
														आ	ज
												०			

नि	सां	ध	धनि	नि	-	सां	रें	नि	सां	-	-	-	-	-	सांरें
कौ	ऽ	न	भ्रम	में	ऽ	भू	ऽ	लूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	औंऽ
×				०				×				०			

नि	सां	ध	धध	नि	-	सां	रें	नि	सां	ध	नि	सां	-	सां	रें
धा	ऽ	र	घर	का	ऽ	य	ह	दु	वा	र	खो	लूँ	ऽ,	आ	ज
×				०				×				०			

नि सां ध धनि | नि – सां रें | नि सां – – | – – – सांरें
कौ ऽ न भ्रम | में ऽ भू ऽ | लूँ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ आँऽ
× | ० | × | ०

नि सां ध धध | नि – सां रें | नि सां ध नि | सां – – –
धा ऽ र घर | का ऽ य ह | दु वा र खो | लूँ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

नि सां सांसां नि | नि निध ध धप | प म म – | – – सां नि
मा नो वह ऽ | आ ऽऽ ऽ रऽ | हा ऽ है ऽ | ऽ ऽ मे रा
× | ० | × | ०

सां गं गं गं | गंगं मं पं मं(पं) | गं रें सां रें | नि सां ध नि
सा ऽ थी ऽ | यह ऽ दु ख | या ऽ मि ऽ | नी ऽ "आ ज"
× | ० | × | ०

"आज······रजनी" तक पुनरावृत्ति करें।

सा साम म म | मम – – – | साम म म म | म प ग –
आ ऽऽ र हा | वह ऽ ऽ ऽ | धाऽ रा ज ल | में ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

म ध ध ध | ध – म – | म ध नि सां | रें रें रेंसां सां
सु र ल गा | ये ऽ ऽ ऽ | नी प व न | पु ल कऽ ज
× | ० | × | ०

नि – सां – | – – – – || सां गं गंगं गं | गं मं गंमं पंमं
गा ऽ ये ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ || य दि वह ऽ | न ऽ आऽ येऽ
× | ० || × | ०

मंपं मं(पं) गं – | – – – – | गं मं मं गं | गं रें रें सां
औ ऽ र ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | वृ था आ ऽ | श्व स की ऽ
× | ० | × | ०

सां	ध	ध	सां	–	–	–	सां	सा	साम	म	–	म	–	म	–
डो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	धु	निऽ	पै	ऽ	फै	ऽ	ला	ऽ
×				०				×				०			

													सां	रें	
ग															
म	म	म	म	म	प	ग	–	म	ध	ध	ध	नि	सां	रें	सां
मि	ल	न	आ	स	ऽ	न	ऽ	बी	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ	नि	शि
×				०				×				०			

नि	–	सां	रें	नि	सां	ध	नि
थि	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ	"आ	ज"
×				०			

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

मल्हार मिश्र

कहरवा (मध्य-द्रुतलय)

मेरा मन मेघ का साथी,
उड़ता चले दिगंत की ओर ।
निःसीम शून्य में श्रावण वर्षण संगीत में ॥
रिमिझिम-रिमिझिम-रिमिझिम ॥

मेरा मन हंस-बलाका पंख से उड़ जाये,
कदाचित् चमकित तड़ित आलोक में ।
झन्-झन् मंजीर बजाये झंझा घोर आनन्द में,
कल-कल-कल करती निर्झरिणी ।
प्रलय आह्वान पुकारे ॥

वायु बहे पूर्व समुन्दर से,
उच्छ्वल छल-छल नदी की तरंगे।
मेरा मन दौड़े उस मत्त प्रवाह में,
ताल-तमाल अरण्य में ।
क्षुब्ध शाखायें डोले रे ॥

सा सा सा सा	सा – रे रेसा	रे प म पम	म ग – म
मे रा म न	में ऽ घ काऽ	सा ऽ थी ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

म			
म प प –	प प प –	पम नि़ नि़ ध	धनि़ प प –
उ ड़ ता ऽ	च ले दि ऽ	गऽ न् त की	ओऽ ऽ र ऽ
×	०	×	०

प			
सां – सां सां	सां – सा सा	सा – रे सा	रे रे ग रे
निः ऽ सी म	शू ऽ न्य में	आ ऽ व न	व र ष ण
×	०	×	०

		रे रे	रे रे
ग म प प	ग म रे –	म रे म रे	म रे म रे
सं ऽ गी त	में ऽ ऽ ऽ	रि म झि म	रि मि झि म
×	०	×	०

म म प –	– – – प
रि मि झि ऽ	ऽ ऽ ऽ म
×	०

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

	प		नि
म प प प	नि़ प नि नि	नि – सां रें	सां प प प
मे रा म न	हं ऽ स ब	ला ऽ का ऽ	पं ऽ ख से
×	०	×	०

		नि	नि
नि नि नि –	सां – – –	सां सां रें सां	सां सां रें सां
ब ह जा ऽ	ये ऽ ऽ ऽ	क दा चि त	क दा चि त
×	०	×	०

नि															
सां	नि॒	नि॒	नि॒	ध	–	नि॒	ध	प	–	पध	म	प	–	–	–
च	म	कि	त	त	ऽ	ड़ि	त	आ	ऽ	लोऽ	क	में	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

										गं					
गं॒	गं॒	गं॒	गं॒	गं॒	–	गं॒	गं॒	गं॒	मं	मं	मं	रें	–	सां	–
झ	न्	झ	न्	मं	ऽ	जी	र	ब	ऽ	जा	ये	झं	ऽ	झा	ऽ
×				०				×				०			

सां				सां				सां	रें	सां	रें	सां	रें		
रें	–	सां	सां	रें	रें	सां	सां	रें	सां	रें	सां	रें	सां	सां	सां
घो	ऽ	र	आ	न	न्	द	में	क	ल	क	ल	क	ल	क	र
×				०				×				०			

नि															
सां	नि॒	नि॒	–	नि॒	ध	प	–	म	म	प	–	प	प	प	म
ती	ऽ	नि	ऽ	झं	रि	णी	ऽ	प्र	ल	य	ऽ	आ	ह्	वा	न
×				०				×				०			

				म			
प	म	प	म	सां	–	–	–
पु	ऽ	का	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें ।

म	म	प	म	प	प	ध	म	प	प	ध	म	प	–	–	–
वा	यु	ब	हे	पु	र	ब	स	मु	न्	द	र	से	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

						नि॒					ध				
प	नि॒	नि॒	नि॒	ध	धनि॒	ध	पध	म	प	मपध	प	म	प	मग॒	म
उ	ऽ	च्छ	त	छ	लऽ	छ	लऽ	न	दी	कीऽऽ	त	रं	ऽ	गें	ऽ
×				०				×				०			

				प											
म	प	प	प	नि॒	प	पनि॒	प	नि	–	नि	प	नि	–	सां	सां
मे	रा	म	न	दौ	ड़े	उऽ	स	म	ऽ	त्त	प्र	वा	ऽ	ह	में
×				०				×				०			

सां नि	सां	रें	रें	रें	मंगं	रें	सांरें	नि	-	सां	सां	-	-	-	-
ता	ऽ	ल	त	मा	ऽऽ	ल	अऽ	र	ऽ	ण्य	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सां	रें रें	सां	सां	नि सां	ध	नि	ध	नि	ध	नि	ध	नि	-	प	ध
लु	ब्	ध	शा	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यें
×				०				×				०			

म	-	पम	पम	पसां	-	-	- ∧
डो	ऽ	लेऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			v

प्रथम चार पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें ।

पीलू मिश्र

दादरा (मध्यलय)

बादल धारा चली गई बाजे विदा का सुर ।

गान अपना शेष कर दे जाना बहुत दूर ।।

नाव तेरी आगे बढ़ी,

तरंगों से उलझ पड़ी ।

डोले नैया होले-होले लहरें बड़ी चतुर,

कदम-केशर बिखर गया वन-उपवन में ।

भौंरे आज राह भूले भटके निराश में ।।

वन में आज चुप है हवा,

आकाश भी आज धूसर हुआ ।

आलोक में आज झलक उठी स्मृति अति मधुर ।।

			प			प	म		ग॒		
प	प	प	म	पध	मप	म	ग॒	-	रे	मग॒	रे
बा	द	ल	धा	राऽ	ऽऽ	च	ली	ऽ	ग	ईऽ	ऽ
×			०			×			०		

						रे					
सा	सा	रे	ग॒	ग॒	रे	सा	-	-	-	-	सा
बा	जे	वि	दा	का	ऽ	सु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०			×			०		

						ध					
म	प	प	प	प	ध	प	सां	सांनि॒	ध	प	-
गा	ऽ	न	अ	प	ना	शे	ष	कऽ	र	दे	ऽ
×			०			×			०		

		ध									
प	ध	प	म	गरे	ग	गम	-	-	-	-	-
शे	ष	क	र	देऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

	प		म								
मप	म	-	ग॒	ग॒	रे	मग॒	-	-	रे	सा	रे
जाऽ	ना	ऽ	ब	हु	त	दूऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०			×			०		

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

प	प	प	प	प	-	प	प	ध	नि॒	सां	निरें
ना	ऽ	व	ते	री	ऽ	आ	ऽ	गे	ब	ढ़ी	ऽऽ
×			०			×			०		

रें		सां					ध		प		
सां	सां	नि॒	ध	प	-	पध	प	प	म	ग	रेग
त	रं	ऽ	गों	से	ऽ	उऽ	ल	झ	प	ड़ी	ऽऽ
×			०			×			०		

						सा			ग॒		
गम	-	-	-	-	ग॒ ||	ग॒	ग॒	-	रे	ग॒	ग॒
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ ||	डो	ले	ऽ	नै	ऽ	या

ग			ग								
रे	ग	–	रे	मग	रे	सा	सा	रे	ग	ग	रे
हो	ले	ऽ	हो	लेऽ	ऽ	ल	ह	रें	ब	ड़ी	च
×			०			×			०		

रे					
सा	–	–	–	–	सा
तु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०		

“गान अपना शेष कर दे,······बादल धारा······दूर” तक पुनरावृत्ति करें।

सा											
नि़	नि़	नि़	नि़	प़	नि़	नि़	सा	सा	सा	सा	रेसा
क	द	म	के	श	र	बि	ख	र	ग	या	ऽऽ
×			०			×			०		

सा				नि़							
नि़	नि़	–	नि़	प़	नि़	नि़	सा	–	सा	–	–
व	न	ऽ	उ	प	ऽ	व	न	ऽ	में	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

			ग			ग			ग		
सा	ग	ग	रे	ग	ग	रे	ग	ग	रे	मग	रे
भौं	ऽ	रे	आ	ऽ	ज	रा	ऽ	ह	भू	ऽऽ	ले
×			०			×			०		

सारे	सा	रे	रे	मग	रे	सारे	सा	–	–	–	–
भऽ	ट	के	नि	राऽ	श	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	प	प	प	–	प	प	प	ध	नि	सां	निरें
ब	न	में	आ	ऽ	ज	चु	प	है	ह	वा	ऽऽ
×			०			×			०		

रें			नि				ध		प		
सां	नि	नि	ध	प	प	पध	प	म	म	ग	रेग
आ	का	श	भी	आ	ज	धूऽ	स	र	हु	ऽ	आऽ
×			०			×			०		

						म			ग		
म	–	–	–	–	–	ग	ग	ग	रे	ग	ग
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	लो	क	में	आ	ज
×			०			×			०		

ग			ग								
रे	ग	ग	रे	मग	रे	सारे	सा	रे	ग	ग	रे
झ	ल	क	उ	ठीऽ	ऽ	स्मृऽ	ति	ऽ	अ	ति	म
×			०			×			०		

रे					
सा	–	–	–	–	सा
धु	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

कालिंगड़ा-रामकली मिश्र

* रूपकड़ा (मध्यलय)

शरत आलोक के कमल वन में ।

बाहर होकर बिहार करे,

जो था मेरे मन ही मन में ॥

सोने के कंकन उसके बाजे ।

आज प्रभात किरन में राजे ॥

हवा से काँपे आँचल उसका,

फैले छाया क्षण-क्षण में ॥

आकुल केश के परिमल में ।

शेफाली वन की उदास वायु,

पड़ी रहे तरु तले ॥

हृदय में देखो हृदय डोले ।

बाहर हो वह भुवन को भूले ॥

आज उसने निज नयनों की दृष्टि,

फैलादी नील गगन में ॥

म			प		म
ग म प	निध —	प प ध	म प ध	मप धप	ग — —
श र त	आऽ ऽ	लो क के	क म ल	वऽ ऽन	में ऽ ऽ
×			×		

			म		
ग म म	म —	म म —	ग म प	गम पध	ध — —
बा ह र	हो ऽ	क र ऽ	बि हा र	कऽ ऽऽ	रे ऽ ऽ
×			×		

ध	सां रें		रें	नि	
नि — सां	रें सां	निसां ध —	ध रें सांनि	ध ध	प — मग
जो ऽ था	मे ऽ	रेऽ ऽ ऽ	म न हीऽ	म न	में ऽ ऽऽ
×			×		

प्रथम तीन पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

	प	ध	नि ध	नि	
ध ध ध	ध —	सां — नि	ध सां नि	ध —	प — —
सो ने के	कं ऽ	क ऽ न	उ स के	बा ऽ	जे ऽ ऽ
×			×		

प					
म ध ध	पध निधप	म ग ग	म निध —	नि —	सां —
आ ज प्र	भाऽ ऽऽऽ	न कि र	ण मेंऽ ऽ	रा ऽ	जे ऽ
×			×		

			गं मं	गं	
सांगं गं गं	गं रें	गं — —	मं गं गं	रें रें	सां — —
हऽ वा से	काँ ऽ	पे ऽ ऽ	आँ च ल	उ स	का ऽ ऽ
×			×		

सां				नि	
रें सां —	नि ध	ध प —	प पध सांनि	ध ध	प — मग
फै ले ऽ	छा ऽ	या ऽ ऽ	क्ष णऽ ऽऽ	क्ष ण	में ऽ ऽऽ
×			×		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

---

* यह कवि रवीन्द्रनाथ द्वारा सृष्ट आठ मात्रा की (३।२।३) ताल है।

म
सा रे म | म - | म म - | ग म - | गम पधु | धु - -
आ कु ल | के ऽ | श के ऽ | प रि ऽ | मऽ ऽल | में ऽ ऽ
×   ×

धु सां रें
नि नि सां | रें - | सां - सां | नि सां सां | सां नि | सां - नि
शे फा ली | व ऽ | न ऽ की | उ दा स | वा ऽ | यु ऽ ऽ
×   ×

सां धु म
नि नि धु | धु - | प - धु | म प धु | मप धुप | ग - -
प ही ऽ | र ऽ | हे ऽ ऽ | त रु ऽ | तऽ ऽऽ | ले ऽ ऽ
×   ×

सां
धु धु धु | नि - | सां सां - | रें रें सां | रेंसां नि | सां - -
हृ द य | में ऽ | दे खो ऽ | हृ द य | डोऽ ऽ | ले ऽ ऽ
×   ×

मं मां नि
सां गं गंरें | गं - | रें सां - | नि सांसां रेंसां | सां नि | धु - -
बा ह रऽ | हो ऽ | व ह ऽ | भु वन कोऽ | भू ऽ | ले ऽ ऽ
×   ×

सां सां सां सां
धसां नि सां | रें सां | सां - - | रें सां निनि | नि - | धु प -
आऽ ऽ ज | उ स | ने ऽ ऽ | नि ज नय | नों ऽ | की ऽ ऽ
×   ×

प मं
गं - गंरें | गं - | रें सां - | सा रे ग | म प | निधु - -
हृ ऽ छिऽ | फै ऽ | ला दी ऽ | नी ल ग | ग न | मेंऽ ऽ ऽ
×   ×

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

बहार मिश्र

त्रिताल (मध्य-द्रुतलय)

आज वसंत जाग्रत द्वार रे।
तव अवगुंठित कुंठित जीवन में,
उसे विडम्बित ना कर रे॥
आज खोलना हृदय-दल खोलना।
आज भूलना-पराया-अपना भूलना॥
इस संगीत मुखरित गगन में,
तेरी गंध की लहरें उड़ना।
इस भुवन की दिशाओं में आना।
देना फैला माधुरी भार रे॥
अति निविड़ वेदना वन में रे।
आज पल्लव-पल्लव में बाजे रे॥
दूर गगन में किस की राह देखे।
आज व्याकुल वसुंधरा साजे रे॥
मेरे मनमें दखिन वायु लगी है।
किस द्वार-द्वार कर फैला माँगे है॥
यह सौरभ विह्वल रजनी।
उस चरणों धरणीतल जागा है॥
ओहे सुन्दर वल्लभ कान्त।
तव गंभीर आह्वान किसको रे॥

			नि ध
			आ ज
			३

ध ध			
नि नि प म	पधप - मग म	नि - - सां	ध सांनि सां नि
व सं ऽ त	जाऽऽ ऽ मऽ त	द्वा ऽ ऽ ऽ	ऽ रऽ रे ऽ
×	२	०	३

ध ध			
नि नि प म	पधप - मग म	नि - ध निध	प सांनि सां नि
व सं ऽ त	जाऽऽ ऽ मऽ त	द्वा ऽ ऽ ऽऽ	ऽ रऽ रे ऽ
×	२	०	३

		सां	सां
ध नि नि सां	सां सां सां सां	नि सांरें सां सां	नि सां नि धनि
त व अ व	गुं ऽ ठि त	कुं ऽऽ ठि त	जी व न मेंऽ
×	२	०	३

	म	म	
प पसां ध प	ग - मग म	नि - ध निध	प सांनि सां -नि
उ सेऽ ऽ वि	ह ऽ म्बि त	ना ऽ ऽ ऽऽ	ऽ कर रे ऽऽ
×	२	०	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

			ध नि
			आ ज

	नि		
नि सां सां सां	सां सांनि रें सांरें	नि नि सां -	- - सां सां
खो ल ना हृ	द यऽ द लऽ	खो ल ना ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

सां		सां	
नि सां रें रें	रें रेंगं रें सांरें	नि - सां सांरें	सां नि, ध धनि
भू ल ना प	रा याअ प नाऽ	भू ऽ ऽ लऽ	ना ऽ, आ जऽ
×	२	०	३

	सां सानि रें सारें (नि)		
नि सां सां सां	सां सानि रें सारें	नि नि सां -	- - सां सां
खो ल ना ह	द यऽ द ल	खो ल नाऽ ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

सां		सां	
नि सां रें रें	रें रेंगुं रें सारें	नि - सां सारें	सां नि॒, धनि॒ प
भू ल न प	रा याआ प नाऽ	भू ऽ ऽ लऽ	ना ऽ, इऽ स
×	२	०	३

म	म	गु॒	
सां - नि॒ पम	प प मगु॒ गु॒	म - रे रे	सा - सा साम
सं ऽ गी तऽ	मु ख रिऽ त	ग ऽ ग न	में ऽ ते रीऽ
×	२	०	३

ग		म	
म - म म	पधप प मगु॒ म	नि॒ - पध सांनि	सां -नि॒ ध नि॒
गं ऽ ध की	लऽऽ ह रेंऽ उ	ड़ा ऽ ऽऽ ऽऽ	ना ऽऽ, इ स
×	२	०	३

गं गं गं गं	गं गं मं पं	मंपं मं गं -	- - गं गं
भु व न की	दि शा ओं में	आऽ ऽ ना ऽ	ऽ ऽ दे ना
×	२	०	३

गं मं मं मं	गं रें सां निसां	ध सां नि रें	सां - नि॒ ध
फै ऽ ला मा	धु री भा रऽ	भा ऽ ऽ र	रे ऽ, "आ ज"
×	२	०	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

			सा म
			अ ति

		ग	
म म म म	म म म म	म प म -	- - म म
नि वि ड़ वे	व ना व न	में ऽ रे ऽ	ऽ ऽ आ ज
×	२	०	३

म प प प | म प म ग॒ | म ध प नि॒ | ध – सा साम
प ल् ल व | प ल्ल व में | बा ऽ जे ऽ | रे ऽ, अ तिऽ
× | २ | ० | ३

ग (above प, third section)
म म म म | म म म म | म प म – | – – म म
नि वि ड़ वे | द ना व न | में ऽ रे ऽ | ऽ ऽ आ ज
× | २ | ० | ३

म प प प | म प म ग॒ | म ध प नि॒ | ध – ध धनि
प ल् ल व | प ल्ल व में | बा ऽ जे ऽ | रे ऽ, दू रऽ
× | २ | ० | ३

नि सां सां सां | सां सांनि रें सांरें | नि नि सां सां | सां –, सां सां
ग ग न में | कि सऽ की ऽऽ | रा ऽ ह दे | खे ऽ, आ ज
× | २ | ० | ३

सां (above नि॒) ; म (above ग॒, second section) ; म (above ग॒, third section)
नि॒ सां नि॒ध प | ग॒ – म प | म॒ म ग॒ रे | सा – ध नि
व्या कु लऽ व | सु ऽ ध रा | सा ऽ जे ऽ | रे ऽ, मे रे
× | २ | ० | ३

नि सां सां सां | सां सांनि रें सांरें | नि नि सां – | – – सां सां
म न में द | खि नऽ वा युऽ | ल गी है ऽ | ऽ ऽ कि स
× | २ | ० | ३

सां (above नि, first section) ; सां (above नि, third section)
नि सां रें रें | रें रेंगं॒ रें सांरें | नि – सां सांरें | सां नि॒, ध नि
द्वा र द्वा र | क रऽ फै लाऽ | माँ ऽ गें ऽऽ | हैं ऽ, मे रे
× | २ | ० | ३

नि सां सां सां | सां सांनि रेंसां रें | नि नि सां – | – – सां सां
म न में द | खि नऽ वा यु | ल गी है ऽ | ऽ ऽ कि म
× | २ | ० | ३

सां		सां	
नि सां रें रें	रें रेंगं रें सांरें	नि - सां सांरें	सां नि धनि प
द्वा र द्वा र	क रऽ फै लाऽ	माँ ऽ गे ऽऽ	है ऽ, य ह
×	२	०	३

प	म		
सां - नि पम	प - मग ग	ग म रे -	सा - सा म
धौ ऽ र भऽ	वि ऽ ह्वऽ ल	र ऽ ज ऽ	नी ऽ उ स
×	२	०	३

		म	
म म म म	मध प मग म	नि -ध पसां नि	सां -नि ध नि
च र णों ध	रऽ नी तऽ ल	जा ऽऽ ऽऽ गा	है ऽऽ, ओ ह्
×	२	०	३

सां गं गं गं	गं गं गं मंपं	मं - - गंमंपं	मं गं गं गं
सु न् द र	व ल् ल भऽ	का ऽ ऽ ऽऽन्	त ऽ त व
×	२	०	३

गं मं मं मं	गं रें सां निसां	ध सां नि रें	सा - पध ध
ग म् भी र	आ ऽ ह्वा नऽ	कि स को ऽ	रे ऽ "आऽ ज'
×	२	०	३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

कल्याण प्रकार

कहरवा (द्रुतलय)

ओरे गृहवासी, जाग अब जाग छाया है फाग।
स्थल-जल वन में छाया-जो-फाग
जाग-अब जाग ॥
लाल हँसी राशि-राशि अशोक पलाश में,
लाल-नशा मेघ छाये प्रभात आकाश में।
नव तरु दलों लगे लाल झटक झाग ॥
वेणु वन मर-मर दखिन वातास में।
तितलियाँ नाचे घास घास में ॥
मधुमाछी माँगती फिरे फूल दखिना,
पाँखों से बजाये निज भिक्षुक वीणा।
माधवी निकुंज वायु मत्त अनुराग ॥

			सा रे
			ओ ऽ

ग रे सा रे	रेध – प –,	सा ध ध ध	प ध नि धप
रे ऽ गृ ह	वाऽ ऽ सी ऽ	जा ग अ ब	जा ऽ ऽ ऽग
×	०	×	०

प ध नि नि	धप – प –	सां सां नि नि	पध ध ध ध
छा या है ऽ	फा ऽ ग ऽ	स्थ ल ज ल	वऽ न में ऽ
×	०	×	०

पध ध ध ध	प – प म	ग ग ग रे	सा सा, सा रे
छाऽ या जो ऽ	फा ऽ ग ऽ	जा ग अ ब	जा ग, "ओ ऽ"
×	०	×	०

"ओरे गृहवासी जाग अब जाग" तक पुनरावृत्ति करें ।

प ग प प	प ध प ध	(ध) सां सां सां सांनि	रेंसां – सां सां
ला ल हूँ सि	रा शि रा शि	अ शो क पऽ	लाऽ ऽ श में
×	०	×	०

सां रें गं गं	रें रें सां सां	निरें रें सां सां	धनि – (ध) प प
ला ल न शा	मे घ छा ये	प्रऽ भा त आ	का ऽ ऽ श
×	०	×	०

गं गं गं रें	रें रें सां सां	सा सा सा रेरे	ग – सा रे
न व त रु	द् लो ल गे	ला ल भ टक	भा ऽ ग ऽ
×	०	×	०

ग ग ग रे	सा सा, सा रे
जा ग अ ब	जा ग, "ओ ऽ"
×	०

"ओरे गृहवासी······फाग" तक पुनरावृत्ति करें ।

सा	ध़	सा	सा	सा	सा	सा	रे	ग	ग	ग	ग	ग	-	ग	रे
वे	णु	व	न	म	र्	म	र्	द्	खि	न	वा	ता	ऽ	स	भ
×				०				×				०			

ग	गध	ध	ध	प	मंप	ग	रे	ग	रे	सा	-	-	-	-	-
ति	तऽ	लि	याँ	ना	चेऽ	घा	स	घा	स	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

प	ग	प	ध	प	ध	प	ध	धसां	सां	सां	सांनि	रेंसां	-	सां	-
म	धु	मा	छी	माँ	ग	ती	फि	रेऽ	फू	ल	दृऽ	खि	ऽ	ना	ऽ
×				०				×				०			

सांगं	गं	गं	रें	रें	रें	सां	सां	निरें	रें	सां	सांनि	धनि	-	धप	-
पाँऽ	खों	से	ब	जा	ये	नि	ज	भि	ऽ	छु	कऽ	वीऽ	ऽ	णाऽ	ऽ
×				०				×				०			

गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	सां	सा	-	मा	रेरे	ग	ग	मा	रे
मा	ध	वी	नि	कुं	ज	वा	यु	म	ऽ	त्त	अनु	रा	ऽ	ग	ऽ
×				०				×				०			

ग	ग	ग	रे	सा	सा	सा	रे
जा	ग	अ	ब	जा	ग	"ओ	ऽ"
×				०			

"ओरे गृहवासी·····फाग" तक पुनरावृत्ति करें।

कालिंगड़ा-रामकली

कहरवा (मध्य-द्रुतलय)

अरी बधू सुन्दरी तुम मधु मंजरी ।
पुलकित चंपा का लो अभिनन्दन ॥

पर्ण के पात्र में फागुन रात में ।
मुकुलित मल्लिका माला बंधन ॥

लाया हूँ वसंत की गंध सुहानी ।
पलाश कुमकुम चांद का चंदन ॥

पारुल का हिल्लोल, शिरीष का हिन्दोल ।
मंजुल वल्ली के वंकिम कंगन ॥

उल्लास चंचल वेनुवन कल्लोल ।
मलय का कंपित किशलय चुम्बन ॥

तेरी आंखों में लगा नयनों में ।
गगन की नीलिमा स्वप्न का अंजन ॥

म म ग म | प – म प | निध – – – | – – – –
अ री ब धू | सु ऽ न् द | रीऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

प ध ध प | म प ध प | मग – – – | – – – –
तु म म धु | मं ऽ ऽ ज | रीऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

ग म ग रे | ग ग म म | म प म ग | म नि नि नि
पु ल कि त | च म् पा का | लो ऽ अ भि | न न् द न
× | ० | × | ०

नि
ध प मग म | प – म प | निध – – – | – – – –
अ री बऽ धू | सु ऽ न् द | रीऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

नि नि
नि नि सां सां | रें – सां सां | नि – सां सां | सां नि ध प
प र् ण के | पा ऽ त्र में | फा ऽ गु न | रा ऽ त में
× | ० | × | ०

प ध नि ध | प प ध प | म – प – | पध प म ग,
मु कु लि त | म ल् लि का | मा ऽ ला ऽ | बंऽ ऽ ध न,
× | ० | × | ०

ग ग ग म | प ऽ म प | निध – – – | – – – –
अ री ब धू | सु ऽ न् द | रीऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

सां
ध ध ध ध | नि नि सां सां | रें – रें सां | नि नि सां सां
ला या हूँ ब | स न् त की | गं ऽ ध सु | हा ऽ नी ऽ
× | ० | × | ०

सां
गं गं गं रें | गं गं गं गं | सां रें गं गं | रेंगं रें सां सां
प ला ऽ श | कु म कु म | चाँ ऽ द का | चं ऽ द न
× | ० | × | ०

सांमं मं मं मं	मं मं पं मं	गं रें गं रें	गं रें गं म
पाऽ रु ल का	हि ल लो ल	शि री ष का	हि न् दो ल
×	०	×	०

गं गं गं गं	रें रें रें रें	सां - सां सां	नि - नि नि
मं ऽ जु ल	व ल् ली के	वं ऽ कि म	कं ऽ ग न
×	०	×	०

ध प मग म	प - म प	निध - - -	- - - -
अ री बऽ धू	सु ऽ न् द	रीऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सा म म म	म प मप ध	प म ग रे	ग रे ग म
च ऽ ल्ला स	च न् चऽ ल	वे नु व न	क ल् लो ल
×	०	×	०

ग ग रे सा	सा रे ग म	ग म ग(म) ग	रे - सा सा
म ल य का	क म् पि त्	कि श ल य	चु म् ब न
×	०	×	०

ध ध नि सां	(सां)रें - रें नि	सां - - -	- - - -
ते री आँ ऽ	खों ऽ ऽ ऽ	में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

ध ध नि सां	सांगं - रें सां	ध नि सां रें	रें नि सां -
ल गा न य	नोंऽ ऽ में ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सां गं गं गं	रें रें सां सां	नि सां नि नि	ध ध प प
ग ग न की	नी लि मा ऽ	स्व प् न का	अं ऽ ज न
×	०	×	०

म ग म म	प प म प	निध - - -	- - - -
अ री ब धू	सु ऽ न् द	रीऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

प्रति विराम स्थल के बाद "अरी बधू.........

[illegible]

बहार अड़ाना मिश्र

दादरा (मध्यलय)

झरे-झरे-झरे-झरे-झरे रंग का झरना ।
आओ आओ रे, आओ उस सुधा से मन भरो-ना ।।
वे मुक्त प्लावित धारायें चित्त मृत्यु आवेश खोयें ।
उस रस का परस पाके धरा नित्य नवीन बरना ।।
वह कलध्वनि दखिन हवा फैलाये गगनमय ।
मर-मर ध्वनि करते आये नवीन किशलय ।
छन्द जागे वन की वीणाओं में वसंत पंचम राग में ।
उस स्वर में तू सुर लगा आनन्द गान करो ना ।।

म	म	-	म	म	-	म	म	-	म	म	-
झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ	झ	रे	ऽ
×			०			×			०		

			ध					ध			
म	प	ध	प	म	ग	म	ध	प	ध	-	नि,
झ	रे	ऽ	रं	ग	का	झ	ऽ	र	ना	ऽ	ऽ,
×			०			×			०		

						रें					
नि	-	नि	निसां	-	रें	नि	सां	नि	ध	-	नि
आ	ऽ	ओ	आऽ	ऽ	ओ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

						सां				रें	
नि	-	सां	सां	-	सां	नि	सां	-	सांरें	सां	सां
आ	ऽ	ओ	उ	ऽ	म	सु	धा	ऽ	सेऽ	म	न
×			०			×			०		

सां						
नि	नि	-	निसां	-	-	Λ
भ	रो	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ	
×			०			V

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

										ध	नि
										वे	ऽ

										रें	
नि	-	सां	सां	सां	सां	सां	सां	-	सांरें	सां	नि
मु	ऽ	क्त	प्ला	वि	त	धा	ऽ	ऽ	राऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

						सां					
निसां	-	-	सां	-	सां	नि	-	सां	रें	रें	रें
येंऽ	ऽ	ऽ	चि	ऽ	त्त	मृ	ऽ	त्यु	आ	वे	श
×			०			×			०		

									गं		
रें	–	सां	रें	–	गं	गं	–	–	रें	सां	सां
खो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यें	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×			०			×			०		

सां				रें			सां				
नि	सां	सां	सांरें	सां	सां	सां	नि	नि	ध	प	–
र	स	का	पऽ	र	स	पा	ऽ	के	ध	रा	ऽ
×			०			×			०		

		ध						सां			
प	ध	प	म	ग	म	प	सां	नि	निसां	–	–
नि	ऽ	त्य	न	वी	न	ब	ऽ	र	णाऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें ।

										सा	म
										व	ह

म	म	–	म	म	–	म	म	म	म	म	–
क	ल	ऽ	ध्व	नि	ऽ	द	खि	न	ह	वा	ऽ
×			०			×			०		

				ग		प					
साम	म	म	म	म	प	म	–	–	–	–	म
फैऽ	ला	ये	ग	ग	न	म	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	य
×			०			×			०		

म	प	प	प	प	प	प	प	ध	ध	–	ध
म	र्	म	र्	ध्व	नि	क	र	ते	आ	ऽ	ये
×			०			×			०		

									सां		
ध	ध	नि	नि	नि	सां	सां	–	रेंसां	नि	सां	ध
न	वी	न	कि	श	ऽ	ल	ऽ	यऽ	आ	ऽ	ये
×			०			×			०		

ध	ध	नि॒	नि॒	नि॒	सां	सां	-	सां	(सां)नि	सां	ध
न	वी	न	कि	श	ऽ	ल	ऽ	यऽ	छ	न्	द
×			०			×			०		

ध	ध	-	ध	ध	नि	नि	सां	सां	(सां)नि	-	सां
जा	गे	ऽ	व	न	की	वी	णा	ऽ	ओं	ऽ	में
×			०			×			०		

(सां)नि	सां	सां	रें	रें	रें	रें	रें	रें	रें	सां	रें
व	स	न्	त	पं	ऽ	च	म	ऽ	रा	ऽ	ग
×			०			×			०		

रेंगं	-	-	(गं)रें	सां	सां	ध	ध	-	ध	ध	नि
मेंऽ	ऽ	ऽ	छ	न्	द	जा	गे	ऽ	व	न	की
×			०			×			०		

नि	सां	सां	(सां)नि	-	सां	(सां)नि	सां	सां	रें	रें	रें
वी	णा	ऽ	ओं	ऽ	में	व	स	न्	त	पं	ऽ
×			०			×			०		

रें	रें	रें	रें	सां	रें	रेंगं	-	-	गंरें	सां	सां
च	म	ऽ	रा	ऽ	ग	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×			०			×			०		

(सां)नि	सां	सां	सांरें	(रें)सां	-	(सां)नि॒	सां	नि॒	ध	(ध)प	-
सु	र	में	ऽऽ	तू	ऽ	सु	ऽ	र	ल	गा	ऽ
×			०			×			०		

पध	(ध)प	प	म	ग	म	प	सां	(सां)नि	निसां	-	-
आऽ	न	न्	द	गा	न	क	रो	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

अड़ाना बहार मिश्र

कहरवा (द्रुतलय)

अरे आओ रे अब तो मतवारे, झूमें रे।
आज नव–जीवन का वसंत रे ॥
प्राचीन बंधन तोड़ के भाई ।
चलो वेग से मेरे राही ॥
अपने को तू दिगंत में खोदे ।
भूल जा तेरे ग़म सारे ॥
बंधन जितने तोड़ उन्हें तू आनन्द से।
आज नव जीवन का वसंत रे ॥
अकुल प्राण के सागर तीर पर ।
किसका तुझ को है रे डर ॥
अपना सब कुछ साथ लिये तू ।
चल दे दूर दिशा में रे ॥

| ध नि
| अ रे

नि नि सां रेंसां | नि सां ध नि | नि नि सां – | नि (रें) रें सां –
आ ओ रे ऽऽ | ऽ ऽ अ रे | आ ओ रे ऽ | अ ब तो ऽ
× | ० | × | ०

नि (रें) रें सां – | नि़ – ध नि़ | प सां सां नि | (रें) सां – ध नि
म त वा ऽ | ऽ ऽ रे ऽ | झू ऽ में ऽ | रे ऽ आ ज
× | ० | × | ०

नि नि सां – | नि (रें) रें सां – | सा म म म | म प प ध
न व जी ऽ | व न का ऽ | व स न् त | रे ऽ अ रे
× | ० | × | ०

नि नि सां रेंसां | नि सां ध नि | नि नि सां – | – – – – ∧
आ ओ रे ऽऽ | ऽ ऽ अ रे | आ ओ रे ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |
× | ० | × | ० v

उपर्युक्त अंश की पुनरावृत्ति करें।

[ध – ध ध | ध – ध नि | नि नि सां सां | रेंसां नि सां –
प्रा ऽ ची न | बं ऽ ध न | तो ड़ के ऽ | भाऽ ऽ ई ऽ
× | ० | × | ०

सां ध रें रें | रें सां सां सां | नि सां निसां रें | सां नि़ ध {(नि) –}]
च लो ऽ ऽ | वे ग से ऽ | मे ऽ रेऽ ऽ | रा ऽ ही (ऽ)]
× | ० | × | ०

सां मं मं मं | मं गं़ गं़ गं़ | गं पं पं मं | मं गं़ गं़ गं़
अ प ने ऽ | को ऽ तू ऽ | दि ग न्त में | खो ऽ दे ऽ
× | ० | × | ०

(मं over गुं; गुं over रें)
रें मं गुं गुं | रें – सां नि, | ध सां सां नि | सां – ध नि
भू ऽ ल जा | ते ऽ रे ऽ | ग़ म सा ऽ | रे ऽ आ ज
× | ० | × | ०

(रें over सां)
नि नि सां – | नि रें सां सां | सा म म म | म प प ध
न व जी ऽ | व न का ऽ | व सं ऽ त | रे ऽ "अ रे"
× | ० | × | ०

केवल प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें ।

(सां over नि़)
[सा म म म | म म म प | प सां सां सांसां | नि़ – ध –
बं ऽ ध न | जि त ने ऽ | तो ऽ इ उन् | हें ऽ तू ऽ
× | ० | × | ०

(रें over रें)
ध नि़ पध नि़ | नि़ – नि़ नि़ | नि़ रें सां नि़ | नि़ ध ध ध
आ ऽ नऽ न्द | से ऽ आ ज | न व जी ऽ | व न का ऽ
× | ० | × | ०

प म मग प | मग़ – – –] | |
व ऽ सऽ न्त | रेऽ ऽ ऽ ऽ] | |
× | ० | |

ध – ध ध | ध – ध नि | नि – सां सां | रेंसां नि सां सां
अ ऽ कु ल | प्रा ऽ ण के | सा ऽ ग र | तीऽ र प र
× | ० | × | ०

(रें over सां; सां over नि़; नि over –)
सां ध रें रें | रें सां सां सां | निसां नि रें सां | नि़ – ध {–}
कि स का ऽ | तु झ को ऽ | हैऽ ऽ रे ऽ | ढ ऽ र {ऽ}
× | ० | × | ०

सां	सां	मं	मं	मं	गं	गं	गं	गं	–	पं	पं	मं	–	गं	गं
अ	प	ना	ऽ	स	ब	कु	छ	सा	ऽ	थ	लि	ये	ऽ	तू	ऽ
×				०				×				०			

गं	रें	मं	गं	रें	रें	सां	नि	ध	सां	सां	नि	सां	–,	ध	नि
च	ल	दे	ऽ	दू	ऽ	र	दि	शा	ऽ	में	ऽ	रे	ऽ,	आ	ज
×				०				×				०			

नि	नि	सां	–	नि	रें	रें सां	–	सा	म	म	म	म	प	"प	ध"
न	व	जी	ऽ	व	न	का	ऽ	ब	स	न्	त	रे	ऽ,	"अ	रे"
×				०				×				०			

"अरे आओरे……आनन्द से" तक गायें ।

माँड़ मिश्र

कहरवा (द्रुतलय)

दूर गाँव से मटियाला पथ रे, आहा मेरे मन को भुलाये रे ।
अरे किसकी ओर बढ़ा के हाथ, लुटकर मिलगया धूल से रे ॥

इसने मुझे घर से बाहर किया है,
किस की चाह में पागल किया है ।
आहा रे आहा रे—

राही बन गया इसके साथ मैं, कहाँ कहाँ ले जाय रे ॥

जाने कौन देश मुझको ले जाये,
कहाँ-कहाँ क्या खेल दिखाये ।

भेद बताये कैसे-कैसे रे इसकी लीला कौन कहे रे ॥

ध़ सा सा सा | सा – सा रे | ग प प ध | प – म पम
दू ऽ र गाँ | व ऽ से ऽ | म टि या ऽ | ला ऽ प थऽ
× | ० | × | ०

म
ग – – – | – – – – | ग – – म | प – – धप
रे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | आ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽऽ
× | ० | × | ०

म
म – – पम | ग – सा रे | ग ग ग म | ग – रे गरे
हा ऽ ऽ ऽऽ | ऽ ऽ मे रे | म न को भु | ला ऽ ये ऽऽ
× | ० | × | ०

सा – – – | – – {प ध / – –} | प ध सां सां | रें – सां सां
रे ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ {ऽ ऽ / अ रे} | कि स की ऽ | ओ ऽ र ब
× | ० | × | ०

सां नि
सां – सां नि | ध– –प ध म | ध प – – | – – – प
ढ़ा ऽ के ऽ | हाऽ ऽऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ थ
× | ० | × | ०

सां
ध ध ध सां | ध ध प ध | म प प म | ग – सा रे
लु ट क र | मि ल ग या | धू ऽ ल से | रे ऽ मे रे
× | ० | × | ०

म
ग ग ग म | ग – रे ग | रेसा – – – | – – – –
म न को भु | ला ऽ ये ऽ | रेऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

ध
ध़ सा सा सा | सा – सा रे | ऽ प प प | प ध प धप
इ स ने ऽ | मु ऽ झे ऽ | घ र से ऽ | बा ऽ ह रऽ
× | ० | × | ०

प															
म	–	मग	पम	ग	–	–	–	ग	ग	ग	म	प	–	प	ध
कि	ऽ	याऽ	ऽऽ	है	ऽ	ऽ	ऽ	कि	स	की	ऽ	चा	ऽ	ह	में
×				०				×				०			

म	–	म	प	म	–	–	पम	ग	–	सा	रे	ग	–	–	म
पा	ऽ	ग	ल	कि	ऽ	ऽ	ऽऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	हैं	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	ग	रे	ग	रेसा	–	सा	म	सा	–	–	–	–	–,	प	ध
आ	हा	रे	ऽ	ऽऽ	ऽ	आ	हा	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	रा	ही
×				०				×				०			

					रें							नि			
ध	सां	सां	सां	सां	रें	सां	–	सां	–	नि	नि	ध–	–प	ध	नि
ब	न	ग	या	इ	स	के	ऽ	सा	ऽ	ऽ	थ	मेंऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध															
प	–	–	–	–	–	–	–	ध	ध	–	सां	ध	–	प	ध
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	हाँ	ऽ	क	हाँ	ऽ	ले	ऽ
×				०				×				०			

मप	–	–	म	ग	–	सा	रे	ग	ग	ग	म	ग	–	रे	ग
जाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	मे	रे	म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽ
×				०				×				०			

रेसा	–	–	–	–	–	प	प	प	–	–	ग	प	प	प	ध
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	जा	ने	कौ	ऽ	ऽ	न	दे	श	मु	झे
×				०				×				०			

ध	सां	–	रें	रें–	–सां	रेंगं	–	रेंसां	–	–	–	–	–	–	–
को	ऽ	ऽ	ले	जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

								गं							
सां	रें	रें	रें	रें	-	सांरें	गं	रें	सां	सां	नि	ध	-प	ध	नि
क	हाँ	ऽ	क	हाँ	ऽ	क्याऽ	ऽ	खे	ऽ	ल	दि	खा	ऽऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

धप	-	-	-	-	-	-	-	प	-	ध	सां	सां	-	सां	-
रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	भे	ऽ	द	ब	ता	ऽ	ये	ऽ
×				०				×				०			

सां	-	सां	नि	नि	ध	पध	नि	धप	-	-	-	-	-	-	-
कै	ऽ	से	ऽ	कै	ऽ	सेऽ	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ध	ध	ध	सां	ध	-	प	ध	म	प	प	म	ग	ग	सा	रे
इ	स	की	ऽ	ली	ऽ	ला	ऽ	कौ	ऽ	न	क	हे	रे,	मे	रे
×				०				×				०			

ग	ग	ग	म	ग	-	रे	ग	रेसा	-	-	-	-	-	-	- ∧
म	न	को	भु	ला	ऽ	ये	ऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ |
×				०				×				०			\

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें ।

यमन–भूपाली

कहरवा (द्रुतलय)

वायु बहे जोर–जोर, बादल घिरे हैं घोर ।

अरे माझी ! नाव चलाइयो ॥

मैं बाँधूँ रे पाल, तू पतवार सँभाल ।

हाँई मारो–मारो टान हाँईयो ॥

झनके बार–बार शृङ्खल झंकार, यह है न नाव की करुण पुकार ।

टूटे न बंधन चित्त है चंचल नैया को अब तू संभालियो ॥

हाँई मारो–मारो टान हाँईयो ॥

गिन–गिन घड़ियाँ चंचल मनुआँ,

बोलो जाऊँ कहाँ या ना जाऊँ रे !

संशय सागर मन में उतार,

उद्वेग क्यों है मन में ।

यदि आये झंझा, तूफान काला, लुंठित हो चाहे सागर बावला,

तो भी मन में डर को न ला तू गीत मगन हो गाइयो ।

हाँई मारो–मारो टान हाँईयो ॥

सा रे ग ग	ग ग ग रे	नि सा रे रे	रे रे रे रेरे
वा यु ब है	जा र जो र	बा द ऽ ल	घि रे है घोर
×	०	×	०

		रे	
ध़ नि़ सा रे	ग – ग रे	ग रे सा –	– – – –
आ र माँ झो	ना ऽ ब च	ला इ यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सा प प म	प मं प प	प नि नि ध	प मं ग ग
मैंऽ ऽ बाँ धु	र ऽ पा ल	तू ऽ प ल	वार स म्हा ल
×	०	×	०

ग			
गं गं गं गं	रें रें सां प	प रें सां –	ध रें सां –
हाँ ई मा रो	मा रो ता न	हाँ इ यो ऽ	हाँ इ यो ऽ
×	०	×	०

ध रें सां –	– – – –
हाँ इ यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

प प प ग	प प प ध	प सां सां सां	सां – सां सां
झ न के ऽ	बा र बा र	झ ऽ ख ल	झं ऽ का र
×	०	×	०

सां रें रें रें	रें रें सांरें गं	गं गं – गं	रें रें सां सां
य ह है न	ना ब कीऽ ऽ	क रु ऽ ण	पु का ऽ र
×	०	×	०

सांगं गं गं गं	रें रें सां सां	रें – सां सां	नि – ध ध
टूऽ टे ऽ न	बं ऽ ध न	चि ऽ त है	चं ऽ च ल
×	०	×	०

सां – नि नि	ध ध प प	पध ध प –	– – – –
नै ऽ या को	अ ब तु स	म्हाऽ लि यो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

ग
गं गं गं गं | रें रें सां प | ध रें सां – | ध रें सां –
हाँ ऽ मा रो | मा रो टा न | हाँ इ यो ऽ | हाँ इ यो ऽ
× | ० | × | ०

ध रें सां – | – – – – ∧|
हाँ इ यो ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ |
× | ० ∨|

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

[मा रे ग ग | ग ग ग – | ग – ग ग | रे रे सा –
गि न गि न | घ ड़ि याँ ऽ | चं ऽ च ल | म नु आँ ऽ
× | ० | × | ०

ध़ नि़ सा रे | ग ग ग ग | रेग रे सा – | – – – –]
बो लो जा ऊँ | क हाँ या ना | जाऽ ऊँ रे ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ]
× | ० | × | ०

ग प प प | प मं प प | प नि नि ध | प मं ग ग
सं ऽ श य | मा ऽ ग र | म न में उ | ता ऽ र ऽ
× | ० | × | ०

प नि नि ध | प मं ग मं | मंनि ध प – | – – – –
उ द् वे ग | क्यों ऽ है ऽ | मऽ न में ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ
× | ० | × | ०

[प ग प ध | प ध प(ध) ध | धसां – सां सां | सां – सां –
य दि आ ये | झ न् झा ऽ | तूऽ ऽ फा न | का ऽ ला ऽ
× | ० | × | ०

सां रें रें रें | सांरें गं गं गं | गं – गं गं | रें – सां सां]
लुं ऽ ठि त | होऽ ऽ चा हे | सा ऽ ग र | बा ऽ व ला]
× | ० | × | ०

सांगं	-	गं	-	रें	रें	सां	-	सांरें	रें	सां	-	नि	नि	ध	-
तोऽ	ऽ	भी	ऽ	म	न	में	ऽ	इऽ	र	को	ऽ	न	ला	तू	ऽ
×				०				×				०			

सां	-	नि	नि	ध	-	प	प	पध	ध	प	-	-	-	-	-
गी	ऽ	त	म	ग	ऽ	न	हो	गाऽ	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

(प)गं	गं	गं	गं	रें	रें	सां	प	ध	रें	सां	-	ध	रें	सां	-
हाँ	इ	मा	रो	मा	रो	टा	न	हाँ	इ	यो	ऽ	हाँ	इ	यो	ऽ
×				०				×				०			

ध	रें	सां	-	-	-	-	- Δ
हाँ	इ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०			V

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें ।

बागेश्री बहार

तेवड़ा (विलंबित-मध्यलय)

मेरे मिलन के लिये तू जाने कब से आरहा।

चाँद तेरा, तेरा सूरज छिपा रखेगा तुझे कहाँ ॥

जाने कब से सुबह-संध्या तव चरण की ध्वनि बाजे।

दूत तेरा मुझको कब से बुला रहा, बुला रहा ॥

हे पथिक! आज मेरी मिलन की बेला में,

हरष मानो जाग रहा है, काँपे मन में।

मिलन की बेला आई है रे, छुटे मेरे काम सारे।

पवन आये हे महाराज! तेरी गंध लेके ॥

सा | | ध म
रेंसां रें सां | सां – | ऩि ध | ऩि प म ऩि –प | म ग॒
मेऽ रें ऽ | मि ऽ | ल न | के ऽ ल ऽ ऽयें | न ऽ
× | २ | ३ | × | २ | ३

म
म म प | प म | ऩि प | प मग॒ मग॒ | मरें – | मा –
जा ने ऽ | क ऽ | ब से | आ ऽऽ ऽऽ | रऽ ऽ | हा ऽ,
× | २ | ३ | × | २ | ३

सा सानि़ रें | रे – | सा – | सा म म | म – | म म
चाँ ऽऽ द | ते ऽ | रा ऽ | ते ऽ रा | सू ऽ | र ज
× | २ | ३ | × | २ | ३

प ध
मग॒ प – | प प | प – | प पप ध | धऩि – | ऩिसां –
छिऽ पा ऽ | र के | गा ऽ | तु केऽ क | हाँऽ ऽ | ऽऽ ऽ
× | २ | ३ | × | २ | ३

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

नि नि – | नि नि | नि सां | सां सां सां | सां – | सां –
जा ने ऽ | क ब | से ऽ | सु ब ह | सं ऽ | ध्या ऽ
× | २ | ३ | × | २ | ३

नि सां नि | रें रें | सां नि | नि सां नि | सांसां रें | सां ऩि
त व च | र ण | की ऽ | ध्व नि ऽ | बाऽ ऽ | जे ऽ,
× | २ | ३ | × | २ | ३

म म – | ऩि ध | ऩि ध | नि सां सां | सां – | सां –
जा ने ऽ | क ब | से ऽ | सु ब ह | सं ऽ | ध्या ऽ
× | २ | ३ | × | २ | ३

नि सां नि | रें रें | सां नि | नि सां नि | सां रें | सां ऩिध
त व च | र ण | की ऽ | ध्व नि ऽ | बा ऽ | जे ऽऽ
× | २ | ३ | × | २ | ३

ध	नि	–	–	–	–	–	सांनि	सां	–नि	नि	ध	नि	प
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दूऽ	ऽ	ऽन	ते	ऽ	रा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

							ग						
प	पम	प	नि	प	म	ग	म	म	–	मम	प	प	–
मु	झऽ	को	क	ब	से	ऽ	तु	ला	ऽ	रऽ	हा	ऽ	ऽ
			२		३		×			२		३	

			प		ध	
प	पप	ध	धनि	–	निसा	–
बु	लाऽ	र	हाऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×			२		३	

पूर्व उल्लिखित पुनरावृत्ति करें।

रें	रें	ग	रें	–	सा	रें	सा	नि	सा	रें	–	रें	–
हे	ऽ	ऽ	प	ऽ	थि	क	आ	ऽ	ज	मे	ऽ	री	ऽ
×			२		३		×			२		३	

							म						
रेंसा	रें	प	प	–ध	मप	धप	प	म	ग	–	–	–	–
मिऽ	ल	न	की	ऽऽ	बेऽ	ऽऽ	ला	ऽ	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

रें	रें	नि	ध	नि	प	ध	मप	मप	गम	रें	–	सा	–
हृ	द	य	मा	ऽ	नो	ऽ	जाऽ	ऽऽ	ऽग	र	ऽ	हा	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा							म			प			
म	–	–	म	–	म	–	प	पप	ध	धनि	–	–	–
है	ऽ	ऽ	काँ	ऽ	पे	ऽ	म	ऽऽ	न	मेंऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

नि	नि												
सां	सां	ध	नि	–	नि	सां	सां	–	सां	सां	–	सां	–
मि	ल	न	की	ऽ	बे	ला	आ	ऽ	ई	है	ऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

									सां				
नि	सां	नि	सांरें	-	सां	नि	निसां	रें	रेंसां	सां	-	[नि] [निध]	[ध] [-]
छू	S	टे	मेS	S	रे	S	काS	S	Sम	षा	S	[S] [रेS]	[S] [S]
X			२		३		X			२		३	

प													
ध	नि	-	-	-	-	-	सांनि	सां	नि	नि	ध	नि	प
S	S	S	S	S	S	S	पS	व	न	आ	S	ये	S
X			२		३		X			२		३	

म							ग						
नि	-	म	म	ग	म	ग	म	म	-	मम	प	प	-
हे	S	म	हा	S	रा	ज	ते	री	S	गंS	S	ध	S
X			२		३		X			२		३	

	प		प		ध	
पध	ध	ध	धनि	-	निसां	-
लोS	S	के	SS	S	SS	S
X			२		३	

प्रथम दो पंक्तियों की पुनरावृत्ति करें।

पीलू खम्माज

कहरवा (विलम्बित)

तुम कुछ दे जाओ,
मेरे प्राणों में गोपन में ।
फूल की गंध से, वंशी की धुन से,
मर-मर मुखरित पवन में ॥
तुम कुछ ले जाओ,
वेदना से वेदन में—
जो मेरे अश्रु हँसी में लीन,
जो वाणी नीरव नयनों में ॥

पनि	नि ध	पर्म	
तुऽ	म	कुऽ	
०			

धप	म	ग	म	प	–	–	प	प	प	म	ग	म	नि	ध	नि
छऽ	ऽ	दे	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	मे	रे	प्रा	ऽ	णों	ऽ
×				०				×				०			
नि ध	–	म	ग	म	नि	नि ध	नि	पध	निसां	निरें	सांरेंसां	–	पनि	नि ध	पर्म
में	ऽ	गो	ऽ	प	ऽ	न	ऽ	मेंऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	तुऽ	म	कुऽ
×				०				×				०			
धप	म	ग	म	प	प	–	प	नि	सां	निसां	रेंगं	गं रें	रें	–	नि
छऽ	ऽ	दे	ऽ	जा	ओ	ऽ,	फू	ल	की	गऽ	नऽ	ध	से	ऽ	वं
×				०				×				०			
सां	रें	धसां	निसांनिध	ध मं	प	–	प	नि	सां	निसां	रेंगं	गं रें	रें	–	नि
शी	की	धुऽ	ऽऽऽऽ	न	से	ऽ,	फू	ल	की	गऽ	नऽ	ध	से	ऽ	वं
×				०				×				०			
सां	रें	धसां	निसांनिध	ध मं	प	–	–	प	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि
शी	की	धुऽ	ऽऽऽऽ	न	से	ऽ	ऽ	म	र्	म	र	मु	ख	रि	त
×				०				×				०			
नि ध	नि	ध	सां	निसां	रेंसांनि	सां	–	–	नि	नि ध	पर्म	धप	म	ग	म
प	ऽ	व	ऽ	नऽ	मेंऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तु	म	कुऽ	छऽ	ऽ	दे	ऽ
×				०				×				०			
प	–	–	प	–	सा	मा	रे	रे	–	ग	–	–	म	मध	ध प
जा	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	तु	म	कु	छ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	लेऽ	ऽ
×				०				×				०			

नि

मग रेग – – | गनि नि नि नि | ध – म – | ध निसां धसां निसांनिध

जाऽ ओऽ ऽ ऽ | वेऽ द ना ऽ | से ऽ ऽ ऽ | वे ऽऽ दऽ ऽऽऽन

× | ० | × | ०

ध ध

प – – – | – सा सा रे | रे – ग – | – म मध प

में ऽ ऽ ऽ | ऽ तु म कु | छ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ लेऽ ऽ

× | ० | × | ०

गं

मग रेग – – | – प नि सां | निसां रेंगं रें – | सांनि नि सां रें

जाऽ ओऽ ऽ ऽ | ऽ जो मे रे | अऽ ऽऽ अ ऽ | ऽऽ हँ सि में

× | ० | × | ०

रें नि नि

ध सांनिध पर्म प | पनि नि नि नि | नि नि ध नि | ध सां निसां रेंसां

ली ऽऽऽ ऽऽ न | जोऽ वा णी नी | र ब न ऽ | य ऽ नोंऽ ऽऽ

× | ० | × | ०

नि

नि सां – – | – नि ध पर्म | धप म ग म | प – – प |

में ऽ ऽ ऽ | ऽ तु म कुऽ | छ ऽ दे ऽ | जा ऽ ऽ ओ |

× | ० | × | ०

इच्छानुसार पुनरावृत्ति करें ।

भैरवी–मिश्र

दादरा (मध्य–द्रुतलय)

हिंसा से मत्त पृथ्वी नित्य निठुर द्वन्द ।
घोर कुटिल पंथ उसका, लोभ जटिल बंध ॥
तेरा नव जन्म माँगे कातर सब प्राणी ।
करो त्राण महाप्राण लाओ अमृतवाणी ॥
विकसित करो प्रेमपद्म चिरमधु निस्यंद ।
शांत हे मुक्त हे, हे अनंत पुण्य ॥
करुणाघन धरणीतल करो कलंक शून्य ॥

क्रंदनमय निखिल भुवन ताप दहन दीप्त ।
विषय–विष–विकार जीर्ण खिन्न अपरितृप्त ॥
देश–देश तिलक लगाये, रक्त कलुष ग्लानि ।
तव मंगल शंख लाओ, तव दक्षिण पाणि ॥
तव शुभ संगीत–राग, तव सुन्दर छन्द ।
शांत हे मुक्त हे, हे अनंत पुण्य ॥
करुणाघन धरणीतल करो कलंक शून्य ॥

सा	ध॒	ध॒	ध॒	प	-	प	-	प	प	मं	प
हिं	ऽ	सा	ऽ	से	ऽ	म	ऽ	त्त	पृ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि॒ध॒	-	-	नि॒	सां	रें॒	नि॒	-	गं॒	रें॒	रें॒	सां
थ्वी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	त्य	नि	ठु	र
×			०			×			०		

सां	नि	सां	-	-	-	सां	गं॒	गं॒	रें॒	सां	सां
द्व	न्	द	ऽ	ऽ	ऽ	घो	ऽ	र	कु	टि	ल
×			०			×			०		

सां	रें॒	नि॒	नि॒ ध॒	ध॒	प	मप	ग॒	ग॒	ग॒	म	ग॒
पं	ऽ	थ	ब	स	का	लोऽ	ऽ	भ	ज	टि	ल
×			०			×			०		

रे॒	-	-	सा	-	- ∧
बं	ऽ	ऽ	ध	-	- ∨
×			०		

“हिंसा से मत्त पृथ्वी” तक पुनरावृत्ति करें।

ध॒	-	ध॒	-	ध॒	नि॒	नि॒	सां	सां	सां	-	सां
ते	ऽ	रा	ऽ	न	ब	ज	न्	म	माँ	ऽ	गे
×			०			×			०		

सां	रें॒	रें॒	रें॒	रें॒	सां	सांरें॒	नि॒	-	सां	-	-
का	ऽ	त	र	स	ब	प्राऽ	ऽ	ऽ	णी	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सांगं॒	गं॒	-	गं॒	रें	गं॒	रेंमं	मं गं॒	-	रें॒	-	सां
कऽ	रो	ऽ	त्रा	ऽ	ण	मऽ	हा	ऽ	प्रा	ऽ	ण
×			०			×			०		

नि	गं	गं	रें	सां	सां	नि	सांरेंसां	निसां	निध	-	-
ला	ऽ	यो	अ	मृ	त	वा	ऽऽऽ	ऽऽ	णीऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	सां	सां	सां	रें	सां	नि	सां	नि	ध	-	प
वि	क	सि	त	क	रो	प्रे	ऽ	म	प	ऽ	श्र
×			०			×			०		

प	नि	नि	नि	ध	प	(प)म	प	(प)म	-	-	-
चि	र	म	धु	नि	ऽ	छ्य	न्	द	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सा	सा	रे	ग	-	-	रे	रे	ग	म	-	प
शा	न्	त	हे	ऽ	ऽ	मु	कु	त	हे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

(प)म	नि	नि	ध	ध	प	म	प	(प)म	-	-	-
हे	ऽ	अ	न	न्	त	पु	ऽ	ण्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

म	प	(प)म	नि	ध	प	म	पम	ग	रे	ग	ग
क	रु	णा	ऽ	घ	न	ध	रऽ	णी	ऽ	त	ल
×			०			×			०		

म	म	म	सा	रे	ग	रे	-	सा	-	-	-
क	रो	क	लं	ऽ	क	शू	ऽ	न्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

“हिंसा से…… बंध” तक पुनरावृत्ति करें।

सा	ध	ध	ध	प	म	प	पनि	ध	ध	प	ग
क्र	न	द	न	म	य	नि	खिऽ	ल	भु	व	न
×			०			×			०		

प	नि	नि	ध	ध	प	मप	प	म	–	–	–
ता	ऽ	प	द	ह	न	दीऽ	पू	त	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	पनि	नि	ध	ध	प	मप	–	म	ग	रे	ग
वि	षऽ	य	वि	ष	वि	काऽ	ऽ	र	जी	र्	ण
×			०			×			०		

म	म	म	सा	रे	ग	(ग)रे	रे	सा	–	–	–
खि	न्	न	अ	प	रि	तृ	प्	त	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	–	ध	धनि	ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां
दे	ऽ	श	देऽ	ऽ	श	ति	ल	क	ला	गा	ये
×			०			×			०		

सां	रें	रें	रें	सां	सां	सांरें	नि	–	सां	–	–
र	कृ	त	क	लु	ष	ग्लाऽ	ऽ	ऽ	नि	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सां	गं	गं	–	गंरें	गं	रें	मं	(मं)गं	रें	–	सां
त	व	मं	ऽ	गऽ	ल	शं	ऽ	ख	ला	ऽ	यो
×			०			×			०		

नि	निगं	गं	–	रें	सां	(सां)नि	सांरेंसां	निसां	निध	–	–
ल	वऽ	द	ऽ	च्छि	ण	पा	ऽऽऽ	ऽऽ	णिऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	सां	सां	सां	सांरें	सां	(सां)नि	सां	नि	ध	–	प
त	व	शु	भ	संऽ	ऽ	गी	ऽ	त	रा	ऽ	ग
×			०			×			०		

प	पनि	नि	-	ध	प	(प)म	प	म	-	-	-
त	वऽ	सुं	ऽ	द	र	छं	ऽ	द	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सा	सा	रे	ग	-	-	रे	रे	ग	म	-	प
शा	न्	त	हे	ऽ	ऽ	मु	क	त	हे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

(प)म	नि	नि	(नि)ध	ध	प	म	प	(प)म	-	-	-
हृ	ऽ	अ	न	न्	त	पु	ऽ	ण्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

म	प	(प)म	नि	ध	प	म	पम	ग	रे	ग	ग
क	रु	णा	ऽ	घ	न	ध	रऽ	णी	ऽ	त	ल
×			०			×			०		

म	म	म	सा	रे	ग	(ग)रे	-	सा	-	-	-
क	रो	क	लं	ऽ	क	शू	ऽ	न्य	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

आसावरी–भैरवी मिश्र

झपताल (मध्यलय)

होगी जय, होगी जय, होगी जय रे।
ओहे वीर हे निर्भय।
चिर प्राण, जयी प्राण जयी रे आनन्दगान।
जयी प्रेम, जयी क्षेम, जयी ज्योतिर्मय रे॥
यह आँधार होगा क्षय, होगा क्षय रे।
ओहे वीर हे निर्भय।
तजो नींद खोलो आँख अवसाद करो राख।
आशा-अरुणालोक हो उदय रे॥

									सा
									हो

रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
गी	ऽ	ज	य	हो	गीऽ	ऽ	ज	य	हो
×		२			०		३		

प ध	सां	सां	-	रें	नि सां	-	नि ध	-	ध
गी	ऽ	ज	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

ध	-	ध सां	सां	ध	ध	-	ध गं	गं	सा
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	भ॔	य,	हो
×		२			०		३		

रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
गी	ऽ	ज	य	हो	गीऽ	ऽ	ज	य	हो
×		२			०		३		

प ध	सां	सां	-	रें	नि सां	-	नि ध	-	ध
गी	ऽ	ज	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

ध	-	ध सां	सां	सां	सां	ध	ध गं	गं,	ध
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	भ॔	य,	चि
×		२			०		३		

ध	-	ध सां	सां	सां रें	सां रें	त्रि	नि सां	सां	सां
र	ऽ	प्रा	ण	ज	यी	ऽ	प्रा	ण	ज
×		२			०		३		

नि		ध		गं					
सां	ध	गं	–	मं	गं	रें	सां	सां	ध
यी	ऽ	रे	ऽ	आ	न	न्द	गा	न	चि
×		२			०		३		

		ध		सां	सां		नि		
ध	–	सां	सां	रें	रें	नि	सां	सां	सां
र	ऽ	प्रा	ण	ज	यी	ऽ	प्रा	ण	ज
×		२			०		३		

नि		ध		गं					सां
सां	ध	गं	–	मं	गं	रें	सां	सां	गं
यी	ऽ	रे	ऽ	आ	न	न्द	गा		ज
×		२			०		३		

गं	रें	गं	गं	गं	गं	रें	गं	गं	गं
यी	ऽ	प्रे	म	ज	यी	ऽ	प्रे	म	ज
×		२			०		३		

		रें							
गं	रें	मं	–	गं	गं	रें	रें	सां	सां
यी	ऽ	ज्यो	ऽ	ति	र्म	य	रे		ओ
×		२			०		३		

नि		ध			सां		ध		
सां	ध	सां	सां	सां	ध	–	गं	गं	सां
हे	ऽ	वी	र	हे	नि	ऽ	र्भ	य	"हो"
×		२			०		३		

उपर्युक्त अंश की पुनरावृत्ति करें

									सांसां
									यह

रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
अँ	ऽ	धा	र	हो	गाऽ	ऽ	च्च	य	हो
×		२			०		३		

प	ध	ध	–	ध	(ध) नि	–	ध	प	प
गा	ऽ	त्त	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

प	ग	ध	ध	ग	गरे	–	सा	सा	सासा
हे	ऽ	वी	र	हे	निऽ	ऽ	भॅ	य,	यह
×		२			०		३		

रे	म	म	म	म	गम	प	प	प	प
आँ	ऽ	धा	र	हो	गाऽ	ऽ	त्त	य	हो
×		२			०		३		

प	ध	ध	–	ध	(ध) नि	–	ध	प	प
गा	ऽ	त्त	ऽ	य	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ओ
×		२			०		३		

(प) ध	–	(प) धनि	नि	ध	धनिध	–	प	प	ध
हे	ऽ	वीऽ	र	हे	निऽऽ	ऽ	भॅ	य,	त
×		२			०		३		

ध	–	(ध) सां	सां	(सां) रें	(सां) रें	नि	(नि) सां	सां	सां
जो	ऽ	नीं	द	खो	लो	ऽ	आँ	ख	अ
×		२			०		३		

(नि) सां	ध	(ध) गं	–	(गं) मं	गं	रें	सां	सां,	ध
व	ऽ	सा	ऽ	द	क	रो	रा	ख,	त
×		२			०		३		

ध	–	(ध) सां	सां	(सां) रें	(सां) रें	नि	(नि) सां	सां	सां
जो	ऽ	नीं	द	खो	लो	ऽ	आँ	ख	अ
×		२			०		३		

^(नि)^सां	ध	^(ध)^गं	–	^(गं)^मं	गं	रें	सां	सां,	^(सां)^गं
व	ऽ	सा	ऽ	द	क	रो	रा	ख,	आ
×		२			०		३		

गं	रें	गं	–	गं	गं	रें	गं	–	गं
शा	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रु	ण	लो	ऽ	क
×		२			०		३		

गं	रें	^(रें)^मं	–	गं	गं	रें	रें	सां	सां
हो	ऽ	ऽ	ऽ	उ	द	य	रे	ऽ	ओ
×		२			०		३		

^(नि)^सां	ध	^(ध)^सां	सां	सां	^(सां)^ध	–	^(ध)^गं	गं,	सा'
ह	ऽ	बी	र	हे	नि	ऽ	र्भ	य,	'(हो)'
×		२			०		३		

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

बिहाग

त्रिताल (विलम्बित)

तुम्हारे असीम में प्रान-मन लेकर जितनी दूर मैं धाऊँ ।
कहीं दुख, कहीं मृत्यु, कहीं विच्छेद ना पाऊँ ॥
मृत्यु वह लेवे मृत्यु का रूप, दुख होये हे दुःख का कूप ।
तुम से जब मैं होके विमुख अपनी ओर निहारूँ ॥
हे पूर्ण तव चरणों में जो कुछ है सब निर्भयता में ।
नहीं है भय, वह केवल मुझे, निशिदिन अब रोऊँ ॥
अन्तर ग्लानि संसार-भार पलक पड़ते ही कहाँ एकाकार,
जीवन में यदि स्वरूप तेरा देखने मैं पाऊँ ॥

प प नि ध | सां सां नि – | प पर्म धप पम | म गमप ग ग
तु म्हा रे अ | सी म में ऽ | प्रा णऽ मऽ नऽ | ले ऽऽऽ क र
० | ३ | × | २

(प) ग म नि नि | ध – प – | म – गम प | ग – (रे) सा सा
जि त नी दू | र ऽ मैं ऽ | धा ऽ ऽऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऊँ
० | ३ | × | २

सा सा म – | म – ग – | ग ग प र्म | प – (र्म) (ध) प –
क हीं ऽ ऽ | दुः ऽ ख ऽ | क हीं ऽ ऽ | मृ ऽ त्यु ऽ
० | ३ | × | २

प नि – नि | नि – नि सां | (ध) नि – (नि) धनिसां – | (ध) नि – (ध) प प
क हीं ऽ वि | च्छे ऽ द ऽ | ना ऽ पाऽऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऊँ
० | ३ | × | २

प्रथम पंक्ति की पुनरावृत्ति करें।

प – नि निनि | नि – नि – | सां – रें नि | सां – – सां
मृ ऽ त्यु वह | ले ऽ वे ऽ | मृ ऽ त्यु का | रू ऽ ऽ प
० | ३ | × | २

सां – सां – | सां सां सांरेंसां – | नि – प प | (प) नि – – नि
दुः ऽ ख ऽ | हो ये हैऽऽ ऽ | दुः ऽ ख का | कू ऽ ऽ प
० | ३ | × | २

सां गं रें – | सां सां नि – | प ध प म | ग – – ग
तु म से ऽ | ज ब मैं ऽ | हो ऽ के वि | मु ऽ ऽ ख
० | ३ | × | २

ग म प नि | नि नि नि सां | (ध) नि – (नि) धनिसां – | (ध) नि – (ध) प प
अ प नी ऽ | ओ र नि ऽ | हा ऽ ऽऽऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ रूँ
० | ३ | × | २

"तुम्हारे असीम में······ना पाऊँ" तक पुनरावृत्ति करें

सा सा प प	प – प –	प प प –	प ध म –
हे पू ऽ र्ण	त ऽ व ऽ	च र णों ऽ	में ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

			ध
प नि नि नि	नि – नि नि	सां सां सां सांनि	नि – प –
जो ऽ कु छ	है ऽ स ब	नि र भ यऽ	ता ऽ में ऽ
०	३	×	२

प			
सां सां सां –	नि – – ध	पप ध प पम	म – ग –
न हीं है ऽ	भ ऽ ऽ य	वह के व लऽ	मु ऽ झे ऽ
०	३	×	२

		रे	
ग ग ग ग	ग म प म	ग – – –	सा – – सा
नि शि दि न	अ ऽ ऽ ब	रो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

प प नि नि	नि – नि –	सां – रें नि	सां – – सां
अ न् त र	ग्ला ऽ नि ऽ	सं ऽ सा र	भा ऽ ऽ र
०	३	×	२

			प
सां सां सां सां	सां सां सांरेंसां –	नि नि प प	नि – – नि
प ल क प	ड़ ते हीऽऽ ऽ	क हाँ ए का	का ऽ ऽ र
०	३	×	२

सां			
सां गं रें रें	सां – नि –	प ध प म	ग – – म
जी व न में	य ऽ दि ऽ	स्व रू प ते	रा ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

		ध नि	ध ध
ग म प नि	नि – – सां	नि – धनिसां –	नि – प प
दे ख ने ऽ	में ऽ ऽ ऽ	पा ऽ ऽऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऊँ
०	३	×	२

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

कीर्त्तनांग

कहरवा (मध्य द्रुतलय)
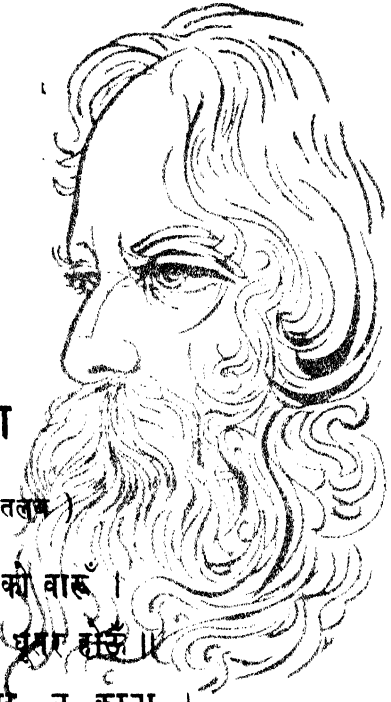
उस आसन तले माटी पर मैं अपने को वारूँ ।
तेरे चरण की धूलि-कणों से मैं धूसर होऊँ ।।
मुझको यों मान देकर दूर न करना ।
सारा जीवन मुझको यों भुलावा न देना ।।
अ-मान सही पर तेरे पद तले खींचे ही रहूँ ।
तेरे चरण की धूलि-कणों से मैं धूसर होऊँ ।।
रहूँ मैं तेरे यात्री दल के पीछे ।
स्थान देना मुझे तुम सब के नीचे ।।
प्रसाद हेतु कितने जन हैं दौड़े आये ।
चाह नहीं कुछ मुझको केवल दर्शन ही भाये ।।
अन्त में जो अवशेष बचे मैं वह-ही लेऊँ ।
तेरे चरण की धूलि-कणों से मैं धूसर होऊँ ।।

रे	ग
उ	स

म	–	प	प	मप	ध	प	–	–	ध	म	प	ग	म	रे	ग
आ	ऽ	स	न	तऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×				०				×				०			

म	–	प	प	मप	ध	प	–	प	ध	नि	सांनि	ध	निध	प	ध
आ	ऽ	स	न	तऽ	ऽ	ले	ऽ	मा	ऽ	टी	ऽऽ	प	रऽ	मैं	ऽ
×				०				×				०			

ध	सां	सां	–	नि सांनि	ध	निध	प	ध	म	प	ग	म	रे	ग
अ	प	ने	ऽ	को ऽऽ	वा	ऽऽ	रूँ,	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×				०			×				०			

म	–	प	प	मप	ध	प	–	–	ध	म	प	ग	म	रे	ग
आ	ऽ	स	न	तऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	उ	स
×				०				×				०			

म	–	प	प	मप	ध	प	–	सां	–	सां	–	सां	सां	सां	सां
आ	ऽ	स	न	तऽ	ऽ	ले	ऽ	ते	ऽ	रे	ऽ	च	र	ण	की
×				०				×				०			

रें	सां	रें	सां	रें	सां	सां	नि	नि	सां	सां	–	नि	सांनि	ध	निध
धू	ऽ	लि	ऽ	क	णों	से	ऽ	धू	ऽ	स	ऽ	र	ऽऽ	हो	ऽऽ
×				०				×				०			

प	ध	म	प	ग	म	रे	ग ∧
ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ,	"उ	स"
×				०			V

"उस आसन तले" पुनरावृत्ति करें।

सां	सां	सां	-	सां	-	-	-	सां	-	सांरें	सां	सां	-	सांसां	रेंसां
मु	झ	को	ऽ	यों	ऽ	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽन	दे	ऽ	ऽ	कऽ	ऽर
×				०				×				०			

नि	सां	नि	धप	प	ध	पध	सां	नि	-	-	-	-	-	धप	-
दू	ऽ	र	नऽ	क	ऽ	रऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				०				×				०			

प	-	पध	निसां	नि	-	धप	प	-	-	-	-	-	-	प	प
सा	ऽ	राऽ	ऽऽ	जी	ऽ	वऽ	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	हे
×				०				×				०			

प	-	पध	निसां	(सां) नि	-	धप	प	प	ध	ध	-	ध	-	(ध) नि	धप
सा	ऽ	राऽ	ऽऽ	जी	ऽ	वऽ	न	मु	झ	को	ऽ	यों	ऽ	ऽ	ऽऽ
×				०				×				०			

प	नि	नि	सांनि	ध	निध	प	ध	प	-	-	-	-	-	-	-
भु	ऽ	ला	वाऽ	न	ऽऽ	दे	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

ग	म	म	प	प	प	प	प	प	-	पध	पम	प	ध॒	ध॒नि॒	प
आ	ऽ	मा	ऽ	स	ही	प	र	ते	ऽ	रेऽ	ऽऽ	प	द	तऽ	ले
×				०				×				०			

प	-	प	ध॒	नि॒	-ध॒	नि॒	ध॒प	प	-	-	-	-	-	-	-
खीं	ऽ	ऽ	ऽ	चे	ऽऽ	र	ऽऽ	हूँ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सां	-	सां	-	सां	सां	सां	सां	रें	सां	रें	सां	रें	सां	सां	नि
ते	ऽ	रे	ऽ	च	र	ण	की	धू	ऽ	लि	ऽ	क	णों	से	ऽ
×				०				×				०			

नि	सां	सां	-	नि	सांनि	ध	निध	प	ध	म	प	ग	म,	रे	ग
धू	ऽ	स	ऽ	र	ऽऽ	हो	ऽऽ	ॐ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	"इ	स"
×				०				×				०			

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

सा	-	सा	सा	रे	-	रे	ग	म	-	-	ध	प	धप	म	प
र	ऽ	हूँ	मैं	ते	ऽ	रे	ऽ	या	ऽ	ऽ	त्री	द	ऽऽ	ल	के
×				०				×				०			

ग	-	-	म	म	-	म	प	प	-	-	-	-	-	-	-
पी	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	छे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

पध	निसां	सां	सां	नि	-	प (ध)	प	प	ध	-	-	-	-	नि	धप
स्थाऽ	ऽऽ	न	दे	ना	ऽ	मु	झे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	प्र	भुऽ
×				०				×				०			

पध	निसां	सां	सां	नि (सां)	-	प (ध)	प	प	ध	-	-	ध	-	ध	-
स्थाऽ	ऽऽ	न	दे	ना	ऽ	मु	झे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तु	ऽ	म	ऽ
×				०				×				०			

सा	-	सा	सा	रे	ग	म	प	ग	-	-	-	-	-	-	-
स	ऽ	ब	के	नी	ऽ	ऽ	ऽ	चे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				०				×				०			

सां	-	सां	सां	सां	-	सां	-	सां	रें	सां	-	सां	-	सांसां	रेंसां
प्र	ऽ	सा	द	हे	ऽ	तु	ऽ	कि	त	ने	ऽ	ज	ऽ	नऽ	ऽऽ
×				०				×				०			

नि	सां	नि	धप	प	ध	पध	निसां	नि	-	-	-	-	-	धप	-
दौ	ऽ	ड़े	ऽऽ	आ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
×				०				×				०			

	ध		
पप - पध निसां	नि - प -	- - - -	- - प प
चाह ऽ नऽ हींऽ	कु ऽ छ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ हे
×	०	×	०

	ध		ध
पप - पध निसां	नि - प -	प ध ध -	ध - नि धप
चाह ऽ नऽ हींऽ	कु ऽ छ ऽ	मु झ को ऽ	के ऽ व लऽ
×	०	×	०

प नि नि सांनि	ध - ध निध	प - - -	- - - -
द र श नऽ	ही ऽ भा ऽऽ	ये ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

ग म म प	प - प प	प - ध॒ म	प ध ध॒नि॒ प
अ मृ त में	ओ ऽ अ ब	शे ऽ ष ब	चे ऽ मैंऽ ऽ
×	०	×	०

पप - प ध	नि॒ -ध॒ नि॒ ध॒प	प - - -	- - - -
वह ऽ ही ऽ	ले ऽऽ ऊँ ऽऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	०	×	०

सां - सां -	सां सां सां सां	रें सां रें सां	रें सां सां नि
ते ऽ रे ऽ	च र ण की	धू ऽ लि ऽ	क णों से ऽ
×	०	×	०

नि सां सां -	नि सांनि ध नि॒ध	प ध म प	ग म, रे ग
धू ऽ स ऽ	र ऽऽ हो ऽऽ	ऊँ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ, "उ स"
×	०	×	०

"उस आसन........धूसर होऊँ" तक पुनरावृत्ति करें ।

केदार

तेवड़ा (मध्यलय)

मेरी मुक्ति आलोक में रे इस गगन में ।
मेरी मुक्ति धूलिकण में फूल-फल में ॥
देह-मन के उस किनारे अपने को मैं कहाँ खोऊँ रे ।
मुक्ति मेरी पवन गावे गीत सुर में ॥
मेरी मुक्ति सर्वजन के मन में है रे ।
दुःख-बाधा तुच्छ जानूँ कठिन पन रे ॥
विश्वधाता की यज्ञशाला आत्महोम की वह्निज्वाला ।
जीवन अपना दूँ आहुती मुक्ति-आश में ॥

	ध												
पध	प	—	म	म	रे	—	सा	साम	म	मग	पर्म	प	—
मेऽ	री	ऽ	मु	क्	ति	ऽ	आ	लोऽ	क्	मेंऽ	ऽऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

								ध					
प	सां	सां	धनि	नि	धप	—	पध	प	—	म	म	रे	—
इ	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ	मेऽ	री	ऽ	मु	क्	ति	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सा	साम	म	मग	पर्म	प	—	सा	सा	—	रे	रे	रे	—
आ	लोऽ	क	मेंऽ	ऽऽ	रे	ऽ	मे	री	ऽ	मु	क्	ति	ऽ
×			२		३		×			२		३	

रे	ग	रे	ग	ग	ग	म	म	प	ध	मप	प	मग	म
धू	ऽ	लि	क	ण	में	ऽ	फू	ऽ	ल	फऽ	ल	मेंऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

म	सां	सां	धनि	नि	धप	—
	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ
×			२		३	

"मेरी मुक्ति" ·· इस गगन में, मेरी मुक्ति······में रे" तक पुनरावृत्ति करें।

प	ध	प	पनि	ध	नि	—	सां	सां	सां	सां	नि	रेंसां	—
दे	ऽ	ह	मऽ	न	के	ऽ	उ	स	कि	ना	ऽ	रेऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सां	निसां	ध	सां	ध	निरें	—	सां	सां	नि	निसां	ध	प	—
अ	ऽप	ने	को	ऽ	मैंऽ	ऽ	क	हाँ	खो	ऊँऽ	ऽ	रे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

सांगं	गं	गं	रें	—	सां	नि	निरें	सां	सां	ध	—	प	—
मुऽ	ऽ	क्ति	मे	ऽ	री	ऽ	पऽ	व	न	गा	ऽ	वे	ऽ
×			२		३		×			२		३	

साम	म	म	मग	पर्म	प	—	प	सां	सां	धनि	नि	धप	—
गीऽ	ऽ	त	सुऽ	ऽर	में	ऽ	इ	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ
×			२		३		×			२		३	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

सा	सा	सा	रे	रे	रे	–	रे	गरे	ग	म	म	प	–
मे	री	ऽ	मु	क	ति	ऽ	स	ऽरू	ब	ज	न	के	ऽ
X			२		३		X			२		३	

मं	प	मंध	ध प	–	म	–	गं	–	गं	गं	–	गं	–
म	न	मेंऽ	है	ऽ	रे	ऽ	दुः	ऽ	ख	बा	ऽ	धा	ऽ
X			२		३		X			२		३	

गंमं	–	मं	रें	–	सां	–	साम	म	म	म	ग	म	–
तुऽ	ऽ	च्छ	जा	ऽ	नूँ	ऽ	कऽ	ठि	न	प	ण	रे	ऽ
X			२		३		X			२		३	

प	ध	प	नि	ध	नि	नि	सां	–	सां	सां	नि	सां	–
वि	ऽ	श्व	धा	ऽ	ता	की	य	ऽ	ज्ञ	शा	ऽ	ला	ऽ
X			२		३		X			२		३	

सां	–	ध	सां	–	सां	रें	सां	–	नि	निसां	–	ध	प
आ	ऽ	त्म	हो	ऽ	म	की	व	ऽ	हि	ज्वा	ऽ	ला	ऽ
X			२		३		X			२		३	

सांगं	गं	गं	रें	रें	सां	नि	सां	गं	गं	रें	–	सां	–
जीऽ	व	न	अ	प	ना	ऽ	दूँ	ऽ	आ	हु	ऽ	ती	ऽ
X			२		३		X			२		३	

ग	म	म	मग	पमं	प	–	प	सां	सां	धनि	नि	धप	–
मु	कु	ति	आऽ	शऽ	में	ऽ	इ	स	ग	गऽ	न	मेंऽ	ऽ
X			२		३		X			२		३	

पूर्व उल्लेखित पुनरावृत्ति करें।

समाप्त

परिशिष्ट

रवीन्द्र-संगीत को उसकी विषय-विचित्रता के कारण कई भागों में विभक्त किया गया है। इनमें 'पूजा' 'स्वदेश' 'प्रेम' 'प्रकृति' 'विचित्र' 'आनुष्ठानिक' इत्यादि भाग उल्लेखनीय हैं। यद्यपि कुछ लोग रवीन्द्रनाथ को प्रकृति का ही कवि मानते हैं, और इसमें भी विशेष रूप से उनके वर्षा-गीत अतुलनीय हैं, फिर भी उनके अन्य भागों के गीत भी उच्चकोटि के हैं। इस पुस्तक में निम्न भागों के गीत संकलित किये गये हैं। गीतों का संक्षिप्त परिचय नितान्त ही साधारण भाव से दिया गया है।

पूजा

ध्वनित आह्वान (ध्वनिल आह्वान) : प्रभात-कालीन 'वैतालिक' प्रार्थना में इस गीत का गायन होता है।

मेरे मिलन के लिये (आमार मिलन लागि) : आराध्य देवता को उद्देश्य करके भक्त-हृदय की नम्र भावना ही इस गीत में प्रमुख है।

तुम्हारे असीम में (तोमर असीमें) : ईश्वर का जब तक स्मरण किया जाता है, पार्थिव सुख-दुःख से हम विचलित नहीं होते, लेकिन जब हम उसकी पूजा या ध्यान से विमुख होते हैं तो सांसारिक विपत्तियों का बोझ अनुभव करते हैं।

होगी जय (हबे जय) : यह गीत रवीन्द्रनाथ के 'फाल्गुनी' नाटक में भी है। धीर तथा साहसी व्यक्ति की समस्त विपत्तियाँ दूर होकर विजयश्री उसका स्वागत करेगी। ऐसी ही उदात्त वाणी इस गीत में है।

उस आसन तले (ओइ आसन तले) : भगवान् के चरणों तले रहने की भक्त की आकांक्षा इस गीत में मुख्य है।

मेरी मुक्ति आलोक में रे (आमार मुक्ति आलोय-आलोय) : भक्त को अपनी मुक्ति उन्मुक्त आकाश और आलोक रश्मि में दिखती है। साथ ही देहातीत और मानसिक जगत् से दूर कहीं मुक्ति की आशा में जाना भी चाहता है। इस गीत में कवि ने अपनी मुक्ति गीत के सुर में देखी है।

स्वदेशी

ओ भुवन मनमोहिनी (अयि भुवन मन मोहिनी) : भारत माता को उद्देश्य करके महाकवि ने इस गीत की रचना की है।

प्रकृति

वीणा मेरी कौन सुर गावे (मोर वीणा उठे कोन सुरे बाजि) : इस गीत में वसंत ऋतु के आगमन का पूर्वाभास दिखाई पड़ता है।

प्रखर तपन ताप से (प्रखर तपन तापे) : ग्रीष्मकाल के उद्दाम वातावरण का चित्रण है इस गीत में।

बादल बाउल बजा रहा रे (बादल बाउल बाजाय रे) : वर्षाकाल के उमड़ते हुए बादलों के झुंड की बंगाल के एक गायक-सम्प्रदाय बाउल से तुलना की है। ये लोग गाने के साथ-साथ नाचते भी हैं। वर्षाकाल की अनुभूति का इस गीत में सजीव चित्रण है।

सावन गगन में (शाङ्न गगने) : रवीन्द्रनाथ की 'भानुसिंहेर पदावली' से यह गीत लिया गया है। यह ब्रज बुलि (ब्रजभाषा में लिखा गया है। एक समय किशोर रवीन्द्रनाथ ने प्राचीन पदावली की प्रेरणा से ही ऐसे गीतों को 'भानुसिंह' के नाम से लिखा था। विद्यापति आदि कवियों ने जिस प्रकार अपने पदों में भनिता 'भनई विद्यापति' से की है, रवीन्द्रनाथ ने भी उसका अनुकरण 'भने भानु' 'भानुसिंह तव दास' तथा 'भानुसिंह बंदिछे' से किया है। इस गीत में वर्षाकाल में राधा का विरह तथा उनकी कृष्ण-दर्शन की आकुलता को कवि ने बड़े मधुर ढङ्ग से चित्रित किया है। रूपांतर में भी विशेष कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

नमो नमो नमो करुणा-घन : ग्रीष्मकाल के पश्चात वर्षा को करुणाघन-मूर्त्ति में उतरते देख कवि ने इस गीत से उसकी वंदना की है।

आज वर्षण मुखरित (आजि वरिषन मुखरित) : इस गीत में वर्षाकाल की रात्रि में विरहिणी की मनोव्यथा फूट पड़ी है।

मेरा मन मेघ का साथी (मन मोर मेघेर संगी) : वर्षाकाल के मेघ को देखकर कवि-मन असीम दिगंत में हंस-बलाकाओं की भाँति विचरण करना चाहता है। वर्षाकाल की प्रकृति का चिर-परिचित रूप हमें इस गीत में दिखाई पड़ता है।

बादल धारा चली गई (बादल धारा हलो सारा) : वर्षाकाल के अन्त में प्रकृति के उदास वातावरण को चित्रित किया गया है।

शरत् आलोक के कमलवन में (शरत आलोर कमल बने) : शरद्काल के आगमन पर हमारे मनमें जो भाव आते हैं—उनका रूप इस गीत में कवि ने गाया है।

वसंत जाग्रत् द्वार तेरे (आजि वसंत जाग्रत द्वारे) : वसंत के आगमन पर मानव-मन में जो एक विशेष अभिव्यक्ति आती है—इस गीत में उसीका प्रतिफलन है।

ओरे गृहवासी खोल द्वार (ओरे गृहवासी खोल दार) : शान्तिनिकेतन में यह गीत प्रतिवर्ष होली के दिन नृत्य आदि के साथ गाया जाता है।

अरी वधू सुन्दरी (ओगो वधू सुन्दरी) : इस गीत में वसंत ऋतु का मनोहर चंचल रूप दिखाई पड़ता है।

झरे-झरे-झरे रंग का झरना (झर-झर-झर-झरे रंगेर झरना) : वसंत में उत्फुल्लित मानव का आनन्द-गान इस गीत से गाया है कवि ने !

अरे आओ रे (ओरे आय रे) : सम्पूर्ण आनन्द को त्याग में विलीन करने का मधुर गान !

तुम कुछ दे जाओ (तुमि किछु दिये जाओ) : वसंत के आनन्द में भी कवि ने वेदना का अनुभव किया है। प्रबल आनन्द में भी जो एक वेदना रहती है—इस गीत में उसी का रूप दिखाई पड़ता है ।

विचित्र

दूर गाँव से (ग्राम छाड़ा ओई) : यह गीत रवीन्द्रनाथ के प्रायश्चित् नाटक में भी है। इसका सुर बंगाल के गायक-समुदाय 'बाउलों' जैसा है।

वायु बहे जोर-जोर (खर वायु वय वेगे) : रूपक के माध्यम से तूफान को देखकर नाविक को सावधान रहने का अभय आश्वास !

हिंसा से उन्मत्त पृथ्वी (हिंसाय उन्मत्त पृथ्वी) भगवान् बुद्ध के जन्म-दिवस के लिये रचित। इस गीत का दूसरा चरण साधारणतः नहीं गाया जाता है। इसीलिये इस पुस्तक में केवल प्रथम और तृतीय चरण ही दिये गये हैं।

नृत्य अङ्क–
प्राचीन एवं आधुनिक नृत्यों पर सचित्रलेख ३.००
कथकलि नृत्यकला–सचित्र नृत्यशिक्षा २.५०
नृत्य भारती-३१५ रेखाचित्र व नृत्यशिक्षा ३.००
कथक नृत्य–सचित्र
(भूमिका ले० शम्भू महाराज) ८.००
बैंजो मास्टर–थ्योरी व प्रैक्टीकल शिक्षा २.००
म्यूज़िक मास्टर–
हारमोनियम, तबला, बाँसुरी–शिक्षा २.००
म्यूज़िक मास्टर–(उर्दू)
हारमोनियम, तबला, बाँसुरी–शिक्षा २.००
स्वरमालिका–
भातखंडेकृत ६२ रागों में १२३ सरगमें २.००
अप्रकाशित राग—भाग १, २, ३–
स्वरलिपियाँ ४.५०
भातखण्डे संगीत पाठमाला–
प्रथम वर्ष के लिये १.२५
फिल्म संगीत–
२९ वाँ भाग, साठ गीतों की स्वर० ४.००
फिल्म संगीत-सन् १९६० के १२ अंक
सौ गीतों की स्वरलिपि तथा अन्य सामग्री ६.००
फिल्म संगीत–सन् १९६१ के १२ अंक
सौ गीतों की स्वरलिपि तथा अन्य सामग्री ६.००
सिने सङ्गीत भाग–१
(५० गीतों की स्वरलिपियाँ) ४.००
आवाज सुरीली कैसे करें–
सचित्र प्रयोग व औषधियाँ ३.००
संगीत निबन्धावली–
संगीत–सम्बन्धी २३ निबन्ध २.००
सितार शिक्षा–परीक्षाओं के लिए गत-तोड़े ४.००

उच्चस्तरीय अध्ययन के लियेः—

संगीत अष्टछाप–
जीवनी व गीत–प्रबन्धों की स्वर० ५.५०
रविशंकर के आरकेस्ट्रा–
वाद्यवृन्द की ५० रचनाएँ ५.००
उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त–
इतिहास २.००
संगीत पद्धतियों का तुलना० अध्ययन २.५०
कलावन्तों की गायिकी–
उस्तादों की स्वरलिपियाँ ३.००

हमारे संगीत–रत्न–
३२५ कलाकारों की जीवनियाँ १५.००
'संगीत' रजत जयन्ती अङ्क–
खोजपूर्ण लेख ५.००
भातखण्डे स्मृति अङ्क–
लेख, जीवनी, स्वरलिपियाँ १.००
ठुमरी अंक–
स्वरलिपि सहित ३६ ठुमरियां २.५०
ठुमरी गायिकी–
स्वरलिपि सहित ४५ ठुमरियाँ ३.००
संगीत पारिजात–
अहोबलकृत (हिन्दी टीका) ४.००
स्वरमेलकलानिधि–
रामामात्यकृत (हिन्दी टीका) १.००
संगीत दर्पण–
दामोदरकृत (हिन्दी टीका) २.५०
दत्तिलम्–दत्तिलकृत (हिन्दी टीका) २.००
म्यूज़िक मिरर–
इङ्गलिश में लेख व स्वरलिपियाँ ६.००
भारत के लोकनृत्य–
सचित्र २०० लोकनृत्य ५.००
राग–कोष–१४३८ रागों का परिचय १.००
संगीत रत्नाकर–भाग १
शार्ङ्गदेव हिन्दी टीका (छपरही है) ७.००
पाश्चात्य संगीत शिक्षा–
स्टाफ़ नोटेशन की सचित्र शिक्षा ६.००

"काका" हाथरसी की हास्य-पुस्तकें

पिल्ला	सचित्र हास्य-कविताएँ व कार्टून	२.००
म्याऊँ	" " "	२.००
दुलत्ती	" " "	२.००
काका की कचहरी	" "	२.००

'संगीत'

गान, वादन और नर्तन पर २८ वर्ष से प्रकाशित सचित्र मासिक पत्र, मूल्य ६) वार्षिक; डाक–व्यय–सहित ६)५६

'फिल्म संगीत'

सरल संगीत का सचित्र मासिक पत्र, मूल्य ६) वार्षिक; मय डाक-व्यय ६)५६; प्रतिअंक ७५ न.पै.

पता—संगीत कार्यालय, हाथरस [उ० प्र०]